UNIT = I

प्रश्न 1→ हरियाणा के इतिहास को जानने के प्रमुख स्रोतों का वर्णन कीजिए?

उत्तर→ **भूमिका** :→ हरियाणा के प्राचीन कालीन इतिहास एवं संस्कृति को जानने के लिए आवश्यक है। हरियाणा के प्राचीन कालीन इतिहास एवं संस्कृति से संबंधित अनेक स्रोत उपलब्ध हैं। इन स्रोतों को तीन भागों - साहित्यिक स्रोत, पुरातत्व संबंधी स्रोत एवं आधुनिक स्रोत सम्मिलित हैं। ये स्रोत हरियाणा के इतिहास के विभिन्न पक्षों को जानने के लिए हमें काफी महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध करवाते हैं। इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार हैं।

I साहित्यिक स्रोत

हरियाणा के प्राचीनकालीन इतिहास एवं संस्कृति को जानने के लिए हमारे पास अनेक प्रकार के साहित्यिक स्रोत उपलब्ध हैं। इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार हैं।

1. **वैदिक साहित्य** :→ हरियाणा के प्राचीन इतिहास की जानकारी प्राप्त करने के लिए वैदिक साहित्य हमारा बहुमूल्य

स्त्रोत हैं। वैदिक साहित्य में वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक तथा उपनिषद् सम्मिलित हैं। इनका महत्व इस बात में है कि इनकी रचना हरियाणा में हुई थी। वैदिक साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण स्थान वेदों का है। वेदों की संख्या चार है। इनके नाम हैं ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद। इनमें ऋग्वेद को विश्व का सबसे प्राचीन ग्रंथ माना जाता है। इनकी रचना 1500 - 1000 ई पू में हुई। इसमें 1028 सूक्त तथा 10,552 मंत्र हैं। इन्हें दस मंडलों में विभाजित किया गया है।

2. जैन साहित्य :→ जैन साहित्य से हमें हरियाणा के इतिहास की अनेक महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त होती हैं। भद्रबाहु का कल्पसूत्र तथा हेमचंद्र का परिशिष्ट पर्वन हरियाणा के प्रथम शताब्दी से तीसरी शताब्दी तक के धार्मिक - सांस्कृतिक जीवन पर काफी प्रकाश डालते हैं। इनके मंथन से पता चलता है कि अग्रोहा जैन धर्म का सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र था।

3. बौद्ध साहित्य :→ बौद्ध साहित्य प्राचीन हरियाणा की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक दशा पर महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाते हैं। दिव्यावदान के अनुसार रोहतक एवं अग्रोहा बौद्ध धर्म के दो प्रसिद्ध केंद्र थे। इसके अनुसार रोहतक के लोग बहुत खुशहाल थे तथा वे संगीत के बहुत शौकीन थे। पंचसूदनि से हमें पता चलता है कि महात्मा बुद्ध ने हरियाणा के अनेक नगरों का भ्रमण किया।

4. महाभारत :→ महाभारत भारत का सबसे बड़ा महाकाव्य है। इसमें एक लाख से अधिक श्लोक हैं। इसकी रचना महर्षि वेद व्यास ने की थी। महाभारत में प्राचीन हरियाणा के इतिहास से संबंधित बहुत महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक जानकारी प्रदान की गई है। इसका कारण यह है कि महाभारत की लड़ाई कुरुक्षेत्र में लड़ी गई थी। भगवान श्री कृष्ण जी ने गीता का संदेश यहीं दिया था। महाभारत के अनुसार हरियाणा के लोग उस समय बहुत खुशहाल थे।

5. **पुराण** :→ पुराणों की कुल संख्या 18 हैं इन पुराणों में हरियाणा के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई हैं। इनमें वामन पुराण में हरियाणा से संबंधित महत्वपूर्ण भौगोलिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जानकारी दी गई हैं। इसमें हरियाणा के सात प्रसिद्ध वनों - (i) काम्यक (ii) आदिति (iii) व्यास (iv) सूर्य (v) शनि (vi) मधु एवं (vii) फलकी तथा नौ नदियों - (i) सरस्वती (ii) आपगा (iii) वैतरणी (iv) अशुमति (v) मधुस्रवा (vi) मंदाकिनी (vii) दृषद्वती (viii) हिरण्यवती (ix) कौशिकी पर काफी प्रकाश डाला गया हैं।

6. **अष्टाध्यायी** :→ अष्टाध्यायी पाँचवी शताब्दी ई० पूर्व में लिखा गया एक विख्यात व्याकरण ग्रंथ था इसके लेखक का नाम पाणिनी था। इसमें हरियाणा के अनेक नगरों जैसे कपिस्थल (कैथल), सोनप्रस्थ (सोनीपत), रोनी (रोड़ी), तुसयाना (तोहाना), युगंधरा (जगाधरी), सैरीसाका (सिरसा) सरुघना (सुघ) एवं कालका पर विस्तृत जानकारी दी गई हैं।

7. **हर्षचरित** :→ हर्षचरित की गणना छठी-सातवीं शताब्दी के हरियाणा के इतिहास को जानने के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोतों में की जाती हैं। इस की रचना हर्षवर्धन के दरबारी कवि बाण-भट्ट ने संस्कृत में की थी। इस ग्रंथ से हमे पुष्पभूति वंश से संबंधित विस्तृत एवं बहुमूल्य जानकारी प्राप्त होती है। बाण भट्ट के अनुसार पुष्पभूति वंश का संस्थापक पुष्पभूति था। वह प्रभाकरवर्धन एवं हर्षवर्धन के बारे में काफी प्रकाश डालता हैं।

8. **राजतरंगिणी** :→ राजतरंगिणी की रचना 12वीं शताब्दी में कल्हण ने की थी। इसमें हरियाणा के राजनीतिक इतिहास के बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी दी गई हैं। इसके अनुसार कश्मीर का प्रसिद्ध शासक ललितादित्य मुक्तापीड़ प्रताप द्वितीय एवं नरेंद्र प्रभा का पुत्र था। नरेंद्र प्रभा पहले रोहतक के एक प्रसिद्ध व्यापारी की पत्नी थी। ललितादित्य ने हरियाणा पर आक्रमण कर यमुना से कालिका तक के क्षेत्र को अपने अधीन कर लिया था।

9. **विदेशियों के वृत्तांत** :- प्राचीन काल में अनेक विदेशी यात्रियों ने भारत की यात्रा की। उन्होंने अपने यात्रा वृत्तांतों में हरियाणा की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक दशा का उल्लेख किया है। इनमें यूनानी यात्री एरियन सिकंदर के भारत आक्रमण के उसके साथ आया था उसने अपने वृत्तांत में लिखा है कि उस समय हरियाणा के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि करना था।

II. पुरातत्व संबंधी स्त्रोत

पुरातत्व संबंधी स्त्रोतों ने प्राचीन हरियाणा के इतिहास के निर्माण में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

1. **अभिलेख** :- प्राचीन कालीन हरियाणा के इतिहास की बिखरी कड़ियों को जोड़ने में अभिलेखों का बहुमूल्य योगदान है। अभिलेखों के अध्ययन को पुरालेख शास्त्र कहा जाता है। अभिलेखों से हमें विभिन्न राजवंशों के साथ-साथ उस समय की सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक दशा एवं प्रचलित भाषाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

(1) तोपड़ा स्तंभ अभिलेख (2) सुघ अभिलेख।
(3) करनाल अभिलेख (4) तोशाम अभिलेख।
(5) हिसार स्तंभ अभिलेख (6) नरसैंका अभिलेख।
(7) कपाल मोचन अभिलेख (8) लाडोल अभिलेख।
(9) पिंजौर अभिलेख (10) अग्रोहा अभिलेख।
(11) सोनीपत अभिलेख (12) पेहोवा अभिलेख।
(13) सिरसा अभिलेख (14) पेहोवा अभिलेख।
(15) अग्रोहा टेबलेट (16) मोहनबाड़ी अभिलेख।
(17) हाँसी अभिलेख (18) लाडनू अभिलेख।
(19) बिजोलिया अभिलेख (20) तोपड़ा अभिलेख।

2. **सिक्के** :- प्राचीन कालीन हरियाणा के इतिहास के निर्माण में सिक्कों की भूमिका प्रशंसनीय है। सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहते हैं। ये सिक्के सोने, चाँदी, तांबे एवं मिली हुई धातुओं से निर्मित हैं। इनके आकार में भी विभिन्नता है। हमें जो सिक्के हरियाणा से प्राप्त हुए हैं। उनमें सबसे प्राचीन सिक्कों को पंचमार्क्ड सिक्के कहा जाता है। ये सिक्के सुघ, अग्रोहा एवं नौरंगाबाद से प्राप्त हुए हैं उनमें सबसे प्राचीन सिक्कों को पंचमार्क्ड कहा जाता है।

(3) मूर्तियां :→ हरियाणा के इतिहास के निर्माण में मूर्तियों की भी उल्लेखनीय भूमिका है। इनसे हमें समकालीन सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक दशा के संबंध में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त होती है। हरियाणा से प्राप्त अधिकांश मूर्तियां हिंदू, जैन एवं बौद्ध धर्म से संबंधित हैं। कुछ मूर्तियां गैर-धार्मिक भी हैं। ये मूर्तियाँ प्रस्तर एवं पक्की मिट्टी की बनी हुई हैं।

(4) स्मारक :→ प्राचीन काल हरियाणा के इतिहास के निर्माण में स्मारकों का विशेष महत्व है। दुर्भाग्यवश हमें हरियाणा के प्राचीन भवन, मंदिर, विहार, स्तूप आदि नहीं मिलते। इसका कारण यह है कि मुस्लिम आक्रमणकारियों के दौरान इनमें से अधिकांश नष्ट हो चुके हैं।

(5.) मुहरे :→ प्राचीन काल हरियाणा के इतिहास के निर्माण में मुहरों का भी मुख्य भूमिका रही है ये मुहरे हमें अग्रोहा, खोखराकोट, दौलतपुर, सुघ, नौरंगाबाद, राजा कर्ण का किला एवं

थेह पोलर से प्राप्त हुई हैं।

III आधुनिक स्त्रोत

प्राचीनकालीन हरियाणा के इतिहास के निर्माण में आधुनिक स्त्रोतों का उल्लेखनीय योगदान है। इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।

1. आधुनिक पुस्तकें :→ प्राचीन काल हरियाणा के इतिहास पर आधुनिक पुस्तकें काफी प्रभाव प्रकाश डालती है। इन पुस्तकों को दो भागों में बांटा जा सकता है। प्रथम वे पुस्तकें हैं जो सीधे हरियाणा से संबंधित है। दूसरी वे पुस्तकें है। जो सीधे भारत से संबंधित है। परंतु इनमें हरियाणा के इतिहास से संबंधित कुछ जानकारी दी गई है। प्रथम प्रकार की आधुनिक पुस्तकों में डॉक्टर के० सी० यादव की हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति - भाग एक, हरियाणा स्टडीज इन हिस्ट्री एंड कल्चर, अहीरवाल का इतिहास वी० एन० दत्ता एवं एच० ए० फड़के की हिस्ट्री ऑफ कुरुक्षेत्र, बुद्ध प्रकाश की हरियाणा थ्रू दि एजेज, हरियाणा एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण है।

2. पत्रिकाएँ :- हरियाणा के प्राचीन काल इतिहास से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण जानकारी हमें आधुनिक शोध पत्रिकाओं से भी प्राप्त होती हैं। इन पत्रिकाओं में सबसे पुरानी हरियाणा शोध पत्रिका है। इसका प्रथम अंक जनवरी 1966 ई० में रोहतक से निकला। इसे प्रत्येक चार माह के पश्चात छापा जाता था।

प्रश्न→ महाभारत की लड़ाई का वर्णन और ऐतिहासिकता का वर्णन कीजिए?

उत्तर→ भूमिका :- महाभारत न केवल भारत अपितु संपूर्ण विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है। इसकी रचना ऋषि वेद व्यास जी ने की थी इसे संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इसमें आरंभ में 8800 श्लोक थे तथा इसे जय के नाम से जाता था बाद में इसमें 24,000 श्लोक हो गए और इसका नाम भरत रखा गया। इस युद्ध के अंत में पांडवों की विजय हुई।

I महाभारत युद्ध की पृष्ठभूमि

महाभारत की कहानी दो परिवारों के मध्य युद्ध का चित्रण है। शांतनु कौरव वंश का अंतिम प्रसिद्ध शासक था। उसके तीन पुत्र थे जिनके नाम थे। भीष्म, चित्रांग एवं विचित्रवीर्य भीष्म बड़ा पुत्र था। वह बहुत मेधावी था। उसने विवाह न करने एवं सिंहासन पर न बैठने की सौगंध खायी थी। चित्रांग भी बहुत वीर था वह कुरुक्षेत्र के प्रथम युद्ध में मारा गया था।

में लगाया। इसकी दाहिनी ओर सरस्वती नदी बहती थी दूसरी ओर पांडव सेना इंद्रप्रस्थ से युधिष्ठिर के अधीन कुरुक्षेत्र की ओर चल पड़ी। इस सेना ने कौरव सेना की पूर्व की ओर अपना शिविर डाला। कुरुक्षेत्र पहुँचने पर दोनों सेनाओं ने अपनी-अपनी मोर्चेबंदी की। दोनों सेनाओं के मध्य महाभारत का युद्ध 18 दिनों तक चला।

महाभारत का युद्ध बड़े नाटकीय ढंग से आरंभ हुआ। अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण से जो उसके सारथी का काम कर रहे थे)

IV युद्ध कब हुआ

महाभारत का युद्ध कब हुआ इस संबंध में इतिहासकारों में मतभेद है। इस संबंध में पाँच तिथियाँ अधिक महत्वपूर्ण है ये तिथियाँ हैं (i) 3102 ई० पू० (ii) 1500 ई० पू० (iii) 950 ई० पू० (iv) 600 ई० पू० तथा (v) 1400 ई० पू०।

(1) 3102 ई० पू० ⟹ प्राचीन परंपराओं के अनुसार महाभारत का युद्ध 3102

ई० पू० में लड़ा गया। इस मत का समर्थन चालुक्य शासक पुलकेसिन द्वितीय के ऐहोल शिलालेख में किया गया है।

2. 1500 ई० पू० ⟹ इस मत का समर्थन प्राचीन काल भारत के महान् विज्ञानी वराहमिहिर ने किया उसके अनुसार जब युधिष्ठिर का शासक था तो उस समय सप्तर्षि माघ नक्षत्र में थे।

3. 950 ई० पू० ⟹ इस मत का समर्थन पार्जिटर ने किया है। इस प्रसिद्ध इतिहासकार के विचारानुसार पुराणों के अनुसार अधिसीम कृष्ण एवं महापद्म नंद के मध्य 26 शासक हुए हैं।

4. 600 ई० पू० ⟹ इस मत का समर्थन डॉक्टर एच० डी० सांकलिया जो कि एक प्रसिद्ध पुरातत्ववेता थे ने किया उनके विचारानुसार लौह का प्रयोग 1100 ई० पू० में नहीं था।

5. 1400 ई० पू० ⟹ डॉक्टर आर० सी० मजूमदार, डॉक्टर एच० सी० चौधरी, डॉक्टर के० सी० यादव तथा बाल कृष्ण मुघतर नामक प्रसिद्ध थे।

V महाभारत युद्ध की ऐतिहासिकता

महाभारत युद्ध की ऐतिहासिकता पर इतिहासकार एक मत नहीं हैं कुछ इतिहासकार महाभारत की ऐतिहासिकता एव सत्यता पर संदेह प्रकट करते हैं दूसरी ओर कुछ इतिहासकार ऐसे है जो महाभारत की ऐतिहासिकता पर पूर्ण विश्वास रखते हैं। यहाँ दोनो पक्षों का संक्षिप्त वर्णन दिया गया हैं।

I. महाभारत युद्ध की ऐतिहासिकता के विपक्ष में

(1) इतिहासकार डाल्मान का कथन हैं कि महाभारत युद्ध दो परिवारों का युद्ध था। ऐसा कहा जाता हैं कि उत्तरी भारत के लगभग सभी महत्वपूर्ण शासकों ने इसमें भाग लिया था।

(2) इतिहासकार कीथ का माननना हैं कि महाभारत का युद्ध प्राचीन काल मे हुआ ही नहीं।

(3) महाभारत के प्रमुख पात्रों कौरवों एवं पांडवो को महाकाव्य में भाई-भाई बताया गया हैं।

(4) प्रसिद्ध इतिहासकार डॉक्टर बुद्ध प्रकाश का भी मानना है कि कौरव एवं पांडव आपस मे भाई-भाई नहीं थे।

(5) इतिहासकार हाल्दमान का विचार है। कि महाभारत की रचना प्राचीन काल मे नहीं अपितु मध्यकाल मे की गई थी।

(6) फादर हेरास नामक इतिहासकार का विचार हैं कि कौरव एवं पांडवों के मध्य युद्ध सिंधु घाटी सभ्यता से पूर्व में लड़ा गया था।

(7) कुछ विद्वान जो महाभारत युद्ध की ऐतिहासिकता पर संदेह करते हैं।

II महाभारत युद्ध की ऐतिहासिकता के पक्ष में :-

इतिहास के महान गहन एवं निष्पक्ष अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि उपरोक्त विद्वानों के विचार तर्क की कसौटी पर ठीक नहीं उतरते।

(1) महाभारत का युद्ध वैदिक साहित्य की रचना के बाद हुआ। अतः इस युद्ध का वैदिक साहित्य में वर्णन न मिलना स्वाभाविक था।

(2) महाभारत में वर्णन किए गए कुरुक्षेत्र, इंद्रप्रस्थ, हस्तिनापुर, पांचाल आदि सभी ऐतिहासिक स्थल हैं।

(3) महाभारत में जिन पात्रों एवं शासकों का वर्णन मिलता है वे सभी ऐतिहासिक व्यक्ति थे।

4. चीनी यात्री ह्वेनसाँग जो कि 630 ई० में भारत आया था ने महाभारत की ऐतिहासिकता का उल्लेख किया है।

5. प्रसिद्ध विद्वान पाणिनी ने भी महाभारत युद्ध से संबंधित व्यक्तियों जैसे अर्जुन, वासुदेव, भीम, युधिष्ठिर व कुरुओं का उल्लेख किया है।

6. पतंजलि ने भीम, नकुल तथा सहदेव का वर्णन किया है।

7. कौटिल्य ने पांडवों के राज्य पर जबरन अधिकार कर लेने के कारण दुर्योधन को विनाश का कारण माना।

प्रश्न 3→ यौधेय कौन थे ? उनके उदय और पतन और प्रशासनिक व्यवस्था का वर्णन कीजिए?

उत्तर→ भूमिका :→ प्राचीन काल हरियाणा के इतिहास में यौधेय एवं अग्र गणों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। यौधेय कौन थे इस संबंध में इतिहासकारों में मतभेद है। यौधेयों का उत्थान पाँचवी शताब्दी ई० पू० में हुआ था। मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात यौधेयों ने हरियाणा में सबसे विशाल गणराज्य की स्थापना की। बाद में यौधेयों ने अग्रों को अपने अधीन कर उनके शासन का अंत कर दिया था।

I यौधेय कौन थे

यौधेय कौन थे इस संबंध में इतिहासकारों में मतभेद है कुछ इतिहासकारों का मानना है कि युधिष्ठिर ने यौधेय गणराज्य की स्थापना की। कुछ अन्य इतिहासकार यह मानते हैं कि यौधेय गणराज्य की स्थापना युधिष्ठिर के पुत्र यौधेय ने की। कुछ अन्य इतिहासकारों के अनुसार युधा नामक माता की संतान यौधेय कहलाई।

II यौधेयों का उदय

यौधेय गणराज्य का उदय कब हुआ इस संबंध में निश्चित और तौर पर कुछ कहना कठिन हैं यौधेय शब्द का उल्लेख हमें पाँचवीं शताब्दी ई० पू० से प्राप्त हैं। यौधेयों के बारे में हमें कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ पतंजलि के महाकाव्य, पुराणों, महाभारत एवं अन्य प्राचीन साहित्यिक ग्रंथों से प्राप्त होती हैं।

मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् यौधेयों ने दूसरी शताब्दी ई० पू० में हरियाणा में प्राचीन भारत के सबसे विशाल गणराज्य की स्थापना की। इसमें लगभग संपूर्ण हरियाणा, राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश तथा पंजाब के कुछ क्षेत्र सम्मिलित थे। समय के साथ-साथ यौधेय गणराज्य की सीमाएँ घटती बढ़ती रही हैं। इनकी राजधानी का नाम बहुधानक नगर थी।

यौधेयों का प्रसिद्ध यूनानी शासक डिमिट्रियस के साथ युद्ध हुआ था। डिमिट्रियस मथुरा और साकेत पर आक्रमण करने के लिए यौधेयों के प्रदेश से गुजरा था।

III यौधेयों का पतन

महान् यौधेय गणराज्य के पतन के लिए कौन से कारण उत्तरदायी थे इस संबंध में निश्चित तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता। यौधेयों को पराजित करने में कुषाण शासकों, कनिष्क तथा हुविष्क, गुप्त शासक समुद्रगुप्त एवं शक शासक रुद्रदमन ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई। अनुमान के आधार पर कहा जा सकता है कि बाद के यौधेय शासक कमजोर प्रमाणित हुए वे आपसी फूट के शिकार हो गए।

IV यौधेयों का प्रशासन

यौधेयों के प्रशासन के बारे में हमें समकालीन स्त्रोतों से कोई विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी हैं। विजयगढ़ शिलालेख एवं अगरोहा मुद्रांक लेख यौधेयों के प्रशासन पर कुछ महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं।

1. महाराजा :→ यौधेय गणराज्य का मुखिया महाराजा होता था। उसका निर्वाचन निश्चित समय के लिए संसद द्वारा किया जाता था उसका पद पैतृक नहीं होता था संसद जब चाहे उसे उसके पद से हटा सकती

भी महाराजा ही महादण्डनायक एवं महा-सेनापति भी होता था महाराजा यौधेय साम्राज्य का प्रशासन अपनी राजधानी प्रकृतानाक नगर से चलता था।

2. प्रशासकीय डिवीजन :→ यौधेय शासकों ने अपने प्रशासन की कुशलता के लिए हरियाणा को दो डिवीजनों में बाँटा हुआ था। इनमें एक डिवीजन का मुख्यालय रोहतक में था एवं दूसरे का सिरसा में। डिवीजन का प्रशासन चलाने के लिए उच्च अधिकारियों की नियुक्ति महाराजा द्वारा की जाती थी।

3. स्थानीय प्रशासन :→ यौधेयों ने अपने प्रशासन की उत्तम व्यवस्था के लिए अपने साम्राज्य को अनेक नगरों एवं गाँवों में विभाजित किया था इनकी व्यवस्था किस प्रकार चलाई जाती थी। इस संबंध में हमें कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

4. सैनिक प्रशासन :→ प्राचीन काल में यौधेय अपनी वीरता एवं अद्भुत साहस के लिए जाने जाते थे यौधेयों को युद्धों से विशेष प्यार था इसलिए

पाणिनी ने यौधेय गण को आयुधजीवी गण कहा था।

IV यौधेयों के सिक्के

यौधेय गणराज्य अपने विशाल सिक्कों के लिए जाना जाता है। यौधेय गणराज्य से संबंधित सर्वप्रथम सिक्के 1834 ई० में कप्तान कोर्ट ने उत्तर प्रदेश से प्राप्त किए। कुछ समय के बाद प्रसिद्ध विद्वान ए० कनिंघम ने यौधेय गणराज्य से संबंधित सिक्के हरियाणा से प्राप्त किए। इनमें से कुछ सिक्के सोनीपत, हाँसी, खरखौदा, जींद, सिरसा, रोहतक, हिसार, गुड़गाँव, करनाल, सोनीपत तथा नौरंगाबाद नामक स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

प्रश्न→ तोमर शासन कौन था?

उत्तर→ **भूमिका** :→ हरियाणा के इतिहास में तोमरों ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई। तोमर वंश की स्थापना 736 ई० में जाउल अथवा अनंगपाल प्रथम ने की थी जाउल के पश्चात उसके उत्तराधिकारियों वासुदेव एवं गंगदेव ने उसके कार्यों को जारी रखा एवं हरियाणा में तोमरों की सत्ता को बनाए रखा। बंगाल के शासक धर्मपाल ने तोमर शासक पृथ्वीमल को पराजित कर उसे अपनी अधीनता को स्वीकार करने के लिए बाध्य किया था परिणाम-स्वरूप चौहानों के प्रसिद्ध शासक पृथ्वीराज तृतीय ने 1189 ई० में तोमर शासक पृथ्वीराज को पराजित कर तोमर वंश का अंत कर दिया।

I तोमर कौन थे

तोमर कौन थे इस संबंध में इतिहासकारों में मतभेद हैं तोमरों के लिए विभिन्न इतिहासकारों ने तंवर, तुंवर, तौंवर, तुंग, तुनूर एवं तोर आदि शब्दों का प्रयोग किया है किंतु उनका शुद्ध नाम तोमर है तोमरों को कुछ इतिहासकार विदेशी आक्रमणकारी अथवा उनकी संतान बताते हैं कुछ अन्य इतिहासकार उन्हें आर्यों की संतान बताते हैं कुछ उन्हें ब्राह्मण मानते हैं जबकि कुछ अन्य उन्हें क्षत्रिय बताते हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉक्टर के० सी० यादव तोमर राजपूत वंश से संबंधित थे। अधिकांश इतिहासकार डॉक्टर के० सी० यादव के मत से सहमत हैं।

II तोमरों का उत्थान

तोमरों के उत्थान एवं विकास के बारे में हमें बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। उनके उत्थान एवं विकास में निम्नलिखित तोमर शासकों का उल्लेखनीय योगदान था।

1. जाउल 736-754 ई० (Jaula 736-754) ⇒ हरियाणा में तोमर वंश की स्थापना 736 ई० में जाउल ने की थी। उसने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया था उसे अनंगपाल प्रथम के नाम से भी जाना जाता है। जाउल को हरियाणा की देखभाल के लिए प्रसिद्ध शासक द्वारा नियुक्त किया गया था।

2. वासुदेव, गंगदेव, प्रथ्वीमल एवं उदय राज 773 - 875 ई० → पाठल के पश्चात् वासुदेव (755 ई० से 773 ई०) तथा गंगदेव (773 ई० से 794 ई०) ने शासन किया व हरियाणा में अपनी स्वतंत्र सत्ता बनाए रखने में सफल हुए। गंगदेव का उत्तराधिकारी प्रथ्वीमल था उसने 794 ई० से 814 ई० तक शासन किया उसे बंगाल के शासक धर्मपाल (770 से 810 ई०) ने पराजित कर दिया था।

3. आपृच्छदेव, पीपलराजदेव, रयुपाल एवं विल्हणपाल 875 - 961 ई० → तोमरों का शासक आपृच्छदेव एक प्रसिद्ध शासक था उसने 875 ई० से 897 ई० तक शासन किया वह अपने लोक भलाई के कार्यों के लिए प्रसिद्ध था उसके उत्तराधिकारी पीपलराजदेव जिसने 897 ई० से 919 ई० तक शासन किया। उसने आपृच्छदेव के अधूरे कार्यों को पूर्ण किया।

4. गोपाल तथा सुलक्षणपाल 961 - 1005 ई० → तोमर शासक गोपाल ने

स्वतन्त्रता प्राप्त करने के उद्देश्य से चौहान शासक सिंहराज से युद्ध किया किंतु पराजय का सामना करना पड़ा। गोपाल का उत्तराधिकारी सुलक्षणपाल था उसने 997 ई० से 1005 ई० तक शासन किया। उसके शासनकाल के हमें अनेक सिक्के प्राप्त हुए हैं। इससे स्पष्ट है कि उसने पुनः अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली थी।

5. जयपाल 1005 - 1021 ई० → जयपाल 1005 ई० में तोमरों का नया शासक बना। उसने 1021 ई० तक शासन किया उसके शासन काल में हरियाणा ने महमूद गजनवी की भयंकर विनाशलीला को देखा। उस समय हरियाणा का भौगोलिक एवं सामरिक दृष्टिकोण से विशेष महत्व था प्रत्येक आक्रमणकारी के लिए जो दिल्ली पर कब्जा करना चाहता था के लिए पहले हरियाणा को अपने अधीन करना अनिवार्य था। महमूद गजनवी ने यह सुन रखा था कि थानेसर में अनेक भव्य मंदिर स्थापित हैं जहाँ धार्मिक्यों में बेशुमार दौलत एकत्रित है। हिंदुओं के लिए थानेसर का वही महत्व था जो मुसलमानों के लिए मक्का का था

"मैं आपका सेवक हूँ, आपका कर दाता हूँ। मेरा भाई आपको कुरुक्षेत्र के बारे में जानकारी देने के लिए आपके पास आ रहा है। मेरे देश वासियों के लिए यह नगर एक अति पवित्र स्थान है। यदि आप का उद्देश्य अन्य धर्मों का दमन करना ही है तो वह आपने नगरकोट का विनाश करके पूर्ण कर लिया है। इसलिए अब कुरुक्षेत्र पर आक्रमण न करें।"

6. कुमारपाल 1021-1051 ई० :→

1021 ई० में कुमारपाल तोमरों का नया शासक बना उसने 1051 ई० तक शासन किया। 1030 ई० में सुल्तान महमूद गजनवी की मृत्यु हो गई 1031 ई० में उसका पुत्र मासूद सिंहासन पर बैठा। मासूद ने 1041 ई० तक शासन किया। मासूद 1041 ई० में अपने पिता के साथ आनेसर पर हुए आक्रमण के समय मौजूद था।

7. अनंगपाल द्वितीय 1051-1081 :→

1051 ई० में कुमारपाल की मृत्यु के पश्चात् अनंगपाल द्वितीय सिंहासन पर बैठा। उसने 1081 ई० तक शासन किया था।

वह एक बहादुर एवं सफल प्रशासक था। उसने तोमर राज्य के गौरव को पुनः स्थापित करने के उद्देश्य से अनेक कदम उठाए। उसने तोमर राज्य की सुरक्षा के लिए सेना को शक्तिशाली बनाया। उसने अपनी राजधानी दिल्ली को अनेक भवनों, दुर्गों तथा मंदिरों से सुसज्जित किया।

8. तेजपाल 1081-1105 ई० :→

1081 ई० में तेजपाल तोमरों का नया शासक बना उसने 1105 ई० तक शासन किया। वह एक अयोग्य एवं निकम्मा शासक प्रमाणित हुआ। उसके शासनकाल में मासूद के उत्तराधिकारी इब्राहीम ने हरियाणा पर एक विशाल सेना के साथ आक्रमण कर दिया।

9. महीपाल एवं विजयपाल 1105-1151 ई० :→

1105 ई० में महीपाल तोमरों का नया शासक बना उसने 1130 ई० तक शासन किया वह तोमरों के गौरव को पुनः स्थापित करने में विफल रहा। 1130 ई० में विजयपाल सिंहासन पर बैठा उसने 1151 ई० तक शासन किया तोमरों की हीन शक्ति का लाभ उठाते

हुए प्रसिद्ध चौहान शासक अर्णोराज ने हरियाणा पर आक्रमण कर तोमर शासक विग्रपाल को करारी पराजय दी। इस युद्ध में पराजय के पश्चात तोमर शासक विग्रपाल को चौहानों की अधीनता को स्वीकार करना पड़ा था।

10. मदनपाल 1151-1167 ई० :→ ई० में मदनपाल तोमर के सिंहासन (1151) पर बैठा। मदनपाल ने अर्णोराज की मृत्यु के बाद चौहानों में सिंहासन के लिए चलने वाले गृहयुद्ध के कारण अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी चौहानों का नया शासक विग्रहराज चतुर्थ इसे सहने करने को तैयार नहीं था।

11. पृथ्वीराज 1167-1189 ई० :→ पृथ्वीराज तोमर वंश का अंतिम शासक था। इसने 1167 ई० से 1189 ई० तक शासन किया वह एक अयोग्य शासक प्रमाणित हुआ। चौहानों के प्रसिद्ध शासक पृथ्वीराय तृतीय ने इस स्वर्ण अवसर को देख कर हरियाणा पर आक्रमण कर उसे अपने अधीन कर लिया।

III तोमरों का पतन

तोमर शासकों ने हरियाणा पर 736 ई० से लेकर 1189 ई० तक शासन किया उनके पतन के लिए अनेक कारण उत्तरदायी थे (i) अनंगपाल द्वितीय के सभी उत्तराधिकारी अयोग्य एवं निम्न निकले उन्होंने साम्राज्य की सुरक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया (ii) तोमर शासकों ने सेना को शक्तिशाली नहीं बनाया। (iii) बाद के तोमर शासकों ने अन्य भारतीय शासकों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध नहीं बनाए। इस स्वर्ण अवसर का लाभ उठाकर तुर्क एवं चौहान शासकों ने हरियाणा पर आक्रमण कर तोमरों के पतन का डंका बजा दिया।

UNIT-II

प्रश्न → पानीपत का दूसरा और तीसरा युद्ध के कारण, घटना और परिणामों का वर्णन कीजिए?

उत्तर → भूमिका :→ पानीपत की दूसरी लड़ाई भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण एवं निर्णायक लड़ाइयों में से एक थी यह लड़ाई 5 नवंबर 1556 ई० को अकबर एवं हेमू जो आदिल शाह का प्रधान मंत्री था के मध्य लड़ी गई। इस लड़ाई में अंततः अकबर की विजय हुई। इस लड़ाई के परिणाम स्वरूप भारत में अफगानों की शक्ति को जबरदस्त आघात लगा तथा मुगल साम्राज्य की पुनर्स्थापना हुई। डॉ० ए० बी० पांडेय के अनुसार, "पानीपत की दूसरी लड़ाई ने बाबर की तीस वर्ष पहले की विजय के कार्य को पूरा किया और तैमूरी वंश की डगमगाती हुई नींव को सुदृढ़ता एवं मजबूती प्रदान की"।

I पानीपत की दूसरी लड़ाई के कारण

पानीपत की दूसरी लड़ाई के लिए अनेक कारण उत्तरदायी थे इनका संक्षेप वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।

1. हेमू द्वारा आगरा एवं दिल्ली पर अधिकार :→ हेमचन्द्र जो इतिहास में हेमू के नाम से जाना जाता है। निस्संदेह मध्यकालीन भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक था उसका जन्म हरियाणा के रेवाड़ी नगर के एक गरीब परिवार में हुआ था। वह अपनी असाधारण योग्यता के आधार पर बिहार के सुल्तान मुहम्मद आदिल शाह सूरी का प्रधानमंत्री बन गया। उसके शौर्य के चर्चे चारों ओर थे कहा जाता है कि उसने मुहम्मद आदिल शाह सूरी के समय 22 लड़ाइयाँ लड़ी तथा सभी में सफलता प्राप्त की।

2. युद्ध परिषद् की बैठक :→ आगरा एवं दिल्ली के पतन तथा तारदी बेग के पलायन की सूचना अकबर को जालंधर में मिली। वह इस सूचना को सुनकर स्तब्ध रह गया। उसे भारत में मुगल साम्राज्य की नींव डगमगाती हुए नजर आने लगी उसे भारत में अपना भविष्य अंधकारमयी लगने लगा। अब आगे क्या रणनीति अपनाई जाए इस संबंध में सरहिंद में 25 अक्तूबर 1556 ई० को

एक युद्ध परिषद् की बैठक आयोजित की गई।

3. तारदी बेग का कत्ल :→ निःसंदेह इस समय मुगल साम्राज्य एक भयंकर संकट से गुजर रहा था बैरम खाँ ने यह उचित समझा कि यदि इस समय स्थिति को सुधारने के लिए कोई साहसपूर्ण कदम न उठाया गया तो अफगानों की विजय एवं मुगलों का सर्वनाश निश्चित है अतः बैरम खाँ ने तारदी बेग पर हेमू के आक्रमण का सामना न करने तथा कायरता दिखाने का दोष लगाया। उसने अकबर की सहमति से तारदी बेग को सार्वजनिक रूप से फांसी दे दी। कुछ इतिहासकारों ने बैरम खाँ के इस कार्य की कटु आलोचना की है। उनके विचारानुसार बैरम खाँ तारदी बेग की उन्नति से ईर्ष्या करता था।

4. मुगलों की हेमू की अग्रिम सेना पर विजय :→ सरहिंद की युद्ध परिषद् द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार मुगल सेना पानीपत की ओर चल पड़ी। जब यह सूचना हेमू को

मिली तो उसने भी अपनी सेना को पानीपत की ओर चलने का आदेश दिया। इस समय हेमू ने एक भयंकर भूल की उसने मुबारक खाँ एवं बहादुर खाँ के नेतृत्व में अपने मुख्य तोपखाने को अग्रिम भेज दिया। इस तोपखाने के साथ भेजे गए सैनिकों की संख्या बहुत कम थी। अतः मुगल सेनापति अली कुली खाँ शैबानी को जब इसकी सूचना मिली तो उसने पानीपत के निकट मुगल सेना को सुगमता से पराजित कर मुगल तोपखाने पर अधिकार कर लिया इससे हेमू की पराजय पहले ही निश्चित हो गई।

II. पानीपत की दूसरी लड़ाई की घटनाएँ :→ यद्यपि हेमू द्वारा भेजे गए अग्रिम दल को पराजय का सामना करना पड़ा था तथा उसके अधिकांश तोपखाने पर मुगलों ने कब्जा कर लिया था। इसके बावजूद उसने अपना धैर्य न खोया। वह अपने अधीन एक लाख अफगान एवं राजपूत सैनिकों तथा 1500 योद्धा हाथियों के साथ पानीपत के रणक्षेत्र में

पहुँचा। उसने अपनी सेना को तीन भागों में बाँटा। इस सेना के मध्य का नेतृत्व उसने स्वयं किया इसके हाथियों दाहिने भाग का नेतृत्व शादी खाँ गक्खड़ तथा बाएँ भाग का नेतृत्व हेमू के भांजे रम्मैया ने किया सेना के सामने हाथियों को रखा गया था। जिन पर बैठे सैनिक बंदूकों एवं धनुषों से लैस थे

मुगलों की सेना पहले से ही पानीपत के मैदान में पहुँच चुकी थी इस सेना में केवल बीस हजार सैनिक थे यह सेना भी तीन भागों में विभाजित थी। इस सेना के मध्य भाग का नेतृत्व अली कुली खाँ शैबानी, दाएँ भाग का नेतृत्व सिकंदर खाँ तथा बाएँ भाग का नेतृत्व अब्दुल्ला खाँ कर रहा था। इस संपूर्ण सेना का नेतृत्व बैरम खाँ कर रहा था। अकबर के अधीन 5 हजार सैनिकों को पीछे रखा गया था। इन्हें निर्देश था कि यदि युद्ध में मुगलों की पराजय हो जाए तो वे अकबर को सुरक्षित काबुल ले जाएँ यद्यपि मुगल सैनिकों की संख्या हेमू के सैनिकों

के मुकाबले बहुत कम थी परंतु हेमू के तोपखाने पर अधिकार के कारण उनका साहस बहुत बढ़ गया था।

III पानीपत की दूसरी लड़ाई का महत्व

पानीपत की दूसरी लड़ाई भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण लड़ाई थी इस लड़ाई के दूरगामी परिणाम निकले इन परिणामों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।

1. अफगान शक्ति का अंत :→ पानीपत की दूसरी लड़ाई अफगानों के लिए बहुत विनाशकारी प्रमाणित हुई। इस लड़ाई में हेमू की पराजय एवं वध से अफगानों की शक्ति को गहरा आघात लगा इस लड़ाई में अफगानों के बहुत से महान् योद्धा एवं अन्य सैनिक मारे गए। शीघ्र ही अफगानों के अन्य नेताओं का भी दमन कर दिया गया।

2. हिंदू राज्य की स्थापना का स्वप्न समाप्त होना :→ मध्यकाल में हेमू केवल एक ऐसा व्यक्ति था जिसने दिल्ली पर अधिकार करके हिंदू साम्राज्य

पहुँचा। उसने अपनी सेना को तीन भागों में बाँटा। इस सेना के मध्य का नेतृत्व उसने स्वयं किया इसके हाथियों दाहिने भाग का नेतृत्व शादी खाँ गक्खड़ तथा बाएँ भाग का नेतृत्व हेमू के भांजे रम्मैया ने किया सेना के सामने हाथियों को रखा गया था। पिछे पर बैठे सैनिक बंदूकों एवं धनुषों से लैस थे

मुगलों की सेना पहले से ही पानीपत के मैदान में पहुँच चुकी थी इस सेना में केवल बीस हजार सैनिक थे यह सेना भी तीन भागों में विभाजित थी। इस सेना के मध्य भाग का नेतृत्व अली कुली खाँ शैबानी, दाएँ भाग का नेतृत्व सिकंदर खाँ तथा बाएँ भाग का नेतृत्व अब्दुल्ला खाँ कर रहा था। इस संपूर्ण सेना का नेतृत्व बैरम खाँ कर रहा था। अकबर के अधीन 5 हजार सैनिकों को पीछे रखा गया था। इन्हें निर्देश था कि यदि युद्ध में मुगलों की पराजय हो जाए तो वे अकबर को सुरक्षित काबुल ले जाएँ यद्यपि मुगल सैनिकों की संख्या हेमू के सैनिकों के मुकाबले बहुत कम थी परंतु हेमू के तोपखाने पर अधिकार के कारण उनका साहस बहुत बढ़ गया था।

III पानीपत की दूसरी लड़ाई का महत्व

पानीपत की दूसरी लड़ाई भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण लड़ाई थी इस लड़ाई के दूरगामी परिणाम निकले इन परिणामों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।

1. अफगान शक्ति का अंत :→ पानीपत की दूसरी लड़ाई अफगानों के लिए बहुत विनाशकारी प्रमाणित हुई। इस लड़ाई में हेमू की पराजय एवं वध से अफगानों की शक्ति को गहरा आघात लगा इस लड़ाई में अफगानों के बहुत से महान योद्धा एवं अन्य सैनिक मारे गए। शीघ्र ही अफगानों के अन्य नेताओं का भी दमन कर दिया गया।

2. हिंदू राज्य की स्थापना का स्वप्न समाप्त होना :→ मध्यकाल में हेमू केवल एक ऐसा व्यक्ति था जिसने दिल्ली पर अधिकार करके हिंदू साम्राज्य

की स्थापना की घोषणा की थी उसने अपना राज्याभिषेक किया तथा विक्रमादित्य की उपाधि धारण की वह भारत में एक विशाल एवं गौरवमयी हिंदू साम्राज्य की स्थापना करने का इच्छुक था। पानीपत की दूसरी लड़ाई में हेमू की पराजय एवं उसके वध ने हिंदू साम्राज्य की स्थापना के स्वप्न को सदैव के लिए चूर-2 कर दिया।

3. मुगल साम्राज्य की पुनर्स्थापना :→ पानीपत की दूसरी लड़ाई का सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिणाम भारत में मुगल साम्राज्य की पुनर्स्थापना था। इस लड़ाई से पूर्व हेमू ने आगरा एवं दिल्ली पर अधिकार कर मुगल शक्ति का लगभग अंत कर दिया था पानीपत की द्वितीय लड़ाई के परिणामस्वरूप मुगलों ने पुनः सुगमता से दिल्ली एवं आगरा पर अधिकार कर लिया था।

4. मुगल संसाधनों में वृद्धि :→ पानीपत की दूसरी लड़ाई में हेमू की पराजय से न केवल अकबर के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा दूर हुई अपितु उसके सैनिक एवं आर्थिक संसाधनों

में बहुत वृद्धि हुई। इस लड़ाई से पूर्व अकबर के पास न तो पर्याप्त युद्ध सामग्री ही थी न विशाल सेना तथा न ही सेना के संगठन के लिए आवश्यक धन था।

5. नवीन युग का सूत्रपात :→ पानीपत की विजय के तत्काल बाद मुगल सेनाएं तीव्रता से दिल्ली की ओर अग्रसर हुई। उन्होंने 6 नवंबर 1556 ई० को बिना किसी विरोध के दिल्ली पर अधिकार कर लिया। अकबर को 7 नवंबर, 1556 ई० को बहुत धूमधाम के साथ भारत का बादशाह घोषित किया गया।

IV मुगलों की सफलता के कारण

पानीपत की दूसरी लड़ाई में हेमू की पराजय एवं मुगलों की सफलता के लिए अनेक कारण उत्तरदायी थे इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।

1. हेमू की महान भूल :→ पानीपत की दूसरी लड़ाई में हेमू की पराजय का एक महत्वपूर्ण कारण उसकी एक महान भूल थी। उसके द्वारा आगरा एवं दिल्ली पर सुगमता से अधिकार कर लेने के कारण

मुगलों में एक आतंक सा छा गया था।

2. हेमू के तोपखाने पर मुगलों का अधिकार :→ पानीपत की दूसरी लड़ाई में यदि हेमू के तोपखाने पर मुगलों का अधिकार न होता तो उसकी पराजय संभव नहीं थी। हेमू ने पानीपत के रणक्षेत्र में पहुँचने से पहले ही अपना समस्त तोपखाना कुछ सैनिकों के साथ अग्रिम रूप में भेज दिया था।

3. बैरम खाँ की वीरता :→ पानीपत की द्वितीय लड़ाई का वास्तविक श्रेय बैरम खाँ की असाधारण वीरता एवं साहस को प्राप्त है। आगरा एवं दिल्ली के पतन के पश्चात मुगल सैनिकों में घोर निराशा व्याप्त थी वे हेमू से दो-दो हाथ करने की अपेक्षा कायर भाग जाना चाहते थे।

4. हेमू का सम्राट बनना :→ कुछ आधुनिक इतिहासकारों का कथन है कि हेमू को प्राप्त होने वाली लगातार सफलताओं ने उसे घमंडी एवं हठी बना

दिया था उसने दूसरों से परामर्श लेना छोड़ दिया था।

5. हेमू का मूर्छित होना :→ पानीपत की दूसरी लड़ाई में हेमू की रणनीति ही उसे ले डूबी। प्रथम वह हाथी पर सवार होकर अपनी सेना का नेतृत्व कर रहा था।

पानीपत की तीसरी लड़ाई

पानीपत की तीसरी लड़ाई जो 14 जनवरी 1761 ई० को अहमद शाह अब्दाली तथा मराठों के मध्य हुई का भारत के इतिहास में विशेष महत्व है।

I पानीपत की तीसरी लड़ाई के कारण

पानीपत की तीसरी लड़ाई के लिए अनेक कारण उत्तरदायी थे इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।

1. अहमदशाह अब्दाली की महत्वाकांक्षा :→ अहमदशाह अब्दाली 1747 ई० में अफगानिस्तान का शासक बना। वह बहुत महत्वाकांक्षी शासक था। वह अफगानिस्तान के अपने छोटे से

राज्य से संतुष्ट नहीं था वह अपने साम्राज्य की विस्तार करना चाहता था उसे एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी।

2. भारत की अनुकूल राजनीतिक दशा :→ 1707 ई० में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् महान् मुगल साम्राज्य तीव्रता से पतन की ओर अग्रसर हो रहा था। 1719 ई० में मुहम्मद शाह के सिंहासन पर बैठने से स्थिति अधिक शोचनीय हो गयी। वह अपना अधिकांश समय सुरा व सुंदरी के संग व्यतीत करता था।

3. मराठों द्वारा रूहेलखंड की लूटमार :→ रूहेलखंड पर रूहेलों का शासन था। 1752 ई० में तथा उसके बाद मराठों ने रूहेलखंड पर अनेक बार आक्रमण करके वहाँ भयंकर लूटमार की। मराठों ने रूहेलों के नेता नजीब खाँ को जो कि दिल्ली के मुगल दरबार में मीर बख्शी के पद पर नियुक्त था को अपने प्रभाव द्वारा उसे पद से हटवा दिया था। इन कारणों से रूहेले मराठों के कट्टर दुश्मन बन गए थे।

4. मराठों की हिंदू पद - पादशाही की नीति :→ मराठे लगातार अपनी शक्ति में वृद्धि करते चले आ रहे थे इससे प्रोत्साहित होकर मराठों ने भारत में हिंदू पद - पादशाही भाव हिंदू साम्राज्य स्थापित करने की घोषणा की। इस कारण भारत में स्थापित मुस्लिम राज्यों को एक गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया।

5. बालाजी बाजीराव की उच्चाकांक्षा रहित नीति :→ पेशवा बालाजी बाजीराव बहुत महत्वाकांक्षी था वह अपने साम्राज्य का अधिक विस्तार करना चाहता था इस उद्देश्य से उसने राजपूतों एवं जाटों पर आक्रमण करने आरंभ कर दिए थे तथा उनके राज्यों में भयंकर लूटमार करते थे।

6. मराठों का दिल्ली एवं पंजाब पर अधिकार :→ अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर अपने आक्रमणों के दौरान 1752 ई० में पंजाब पर तथा 1756 ई० में दिल्ली पर अधिकार कर लिया था। उसने पंजाब में अपने पुत्र तैमूर शाह तथा दिल्ली में रूहेला नेता दो

II पानीपत की तीसरी लड़ाई की घटनाएँ

1759 ई० के अंत में अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण किया। उसने सर्वप्रथम पंजाब पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् वह दिल्ली की ओर बढ़ा। रास्ते में उसे मराठों ने रोकने का प्रयास किया परंतु उन्हें सफलता प्राप्त न हुई। जब बालाजी बाजीराव को इन घटनाओं संबंधी सूचना मिली तो वह तिलमिला उठा। उसने एक विशाल सेना को सदाशिव राव भाऊ के नेतृत्व में भेजा उसकी सहायता के लिए पेशवा ने अपने पुत्र विश्वास राव को भी भेजा। इस सेना के तोपखाने का नेतृत्व इब्राहीम गार्दी को सौंपा गया मराठों द्वारा अपनाई गई लूटमार की नीति के कारण राजपूत तथा पंजाब के सिख पहले से ही उनसे नाराज थे इसलिए इस संकट के समय में उन्होंने मराठों को अपना सहयोग प्रदान नहीं किया। मराठों ने जाट नेता सूरजमल के अहमदशाह अब्दाली के विरुद्ध छापामार युद्ध प्रणाली को अपनाने के परामर्श को मानने से इंकार कर दिया।

III पानीपत की तीसरी लड़ाई के परिणाम

पानीपत की तीसरी लड़ाई भारतीय इतिहास की निर्णायक एवं महत्वपूर्ण लड़ाईयों में से एक थी इस लड़ाई के दूरगामी परिणाम निकले इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।

1. **मराठों का घोर विनाश** :→ पानीपत की तीसरी लड़ाई मराठों के लिए घोर विनाश सिद्ध हुई। इस लड़ाई में लगभग 28,000 मराठा सैनिक मारे गए तथा बड़ी संख्या में जख्मी हुए। अनेक मराठा सैनिक बंदी बना लिए गए कहा जाता है कि महाराष्ट्र का कोई घर ऐसा न था जिसका कोई न कोई सदस्य इस लड़ाई में न मारा गया हो।

2. **मराठों की शक्ति एवं सम्मान को गहरा धक्का** :→ पानीपत की तीसरी लड़ाई से पूर्व मराठा शक्ति की गणना भारत की प्रमुख शक्तियों में की

जाती थी। मराठों को अजेय समझा जाता था। पानीपत की तीसरी लड़ाई में मराठों की जबरदस्त पराजय के कारण उनकी शक्ति एवं सम्मान को गहरा धक्का लगा।

3. मराठों की एकता का अंत :→ पानीपत की तीसरी लड़ाई में मराठों की प्रतिष्ठा को भारी आघात पहुँचने से मराठा संघ की एकता का अंत हो गया। परिणाम स्वरूप वे आपसी मतभेदों एवं झगड़ों में उलझ गए। इसके अतिरिक्त पानीपत की तीसरी लड़ाई में मराठों के लगभग सभी प्रसिद्ध नेता मारे गए थे।

4. पंजाब में सिखों की शक्ति का उत्थान :→ अहमद शाह अब्दाली ने 1752 ई० में पंजाब से मुगल शासन का अंत कर दिया था। 1758 ई० में मराठों ने अहमद शाह अब्दाली के पुत्र तैमूर शाह को पराजित कर पंजाब पर अधिकार कर लिया था। पानीपत की तीसरी लड़ाई में अहमद शाह अब्दाली ने मराठों की शक्ति को कुचल दिया।

परिणाम स्वरूप पंजाब मराठों के हाथों से सदा के लिए जाता रहा। अब पंजाब में प्रभुत्व स्थापित करने के लिए केवल दो ही शक्तियाँ अफगान एवं सिख शेष रह गई।

5. भारत में अंग्रेजों की शक्ति का उत्थान :→ भारत में अंग्रेजों को अपना साम्राज्य स्थापित करने मार्ग में सबसे अधिक चुनौती मराठों की थी। पानीपत की तीसरी लड़ाई में मराठों की जबरदस्त पराजय से भारत में अंग्रेजों को अपनी सत्ता स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त हो गया। निस्संदेह इसे भारतीय इतिहास का एक निर्णायक मोड़ कहा जा सकता है।

IV मराठों की पराजय के कारण

पानीपत की तीसरी लड़ाई में मराठों की पराजय के लिए अनेक कारण उत्तर दायी थे। इन कारणों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।

1. अफगानों की शक्तिशाली सेना।
2. अहमद शाह अब्दाली का योग्य नेतृत्व।
3. मराठों की लूटमार की नीति।

4. मराठों में एकता की कमी।
5. छापामार युद्ध प्रणाली का परित्याग।
6. मुस्लिम रियासतों द्वारा अब्दाली को सहयोग।
7. खाद्य सामग्री की कमी।
8. शीविर में स्त्रियाँ।
9. मराठों की आर्थिक कठिनाइयाँ।
10. मल्हार राव होल्कर का विश्वासघात।
11. सदाशिव राव भाऊ की भयंकर भूल।

प्रश्न→ तराइन के पहले और दूसरे युद्ध के कारण, घटना और परिणामों का वर्णन कीजिए?

उत्तर→ भूमिका :→

I तराइन की प्रथम लड़ाई 1191 ई०

1191 ई० में तराइन की प्रथम लड़ाई मुहम्मद गौरी तथा पृथ्वीराज चौहान तृतीय जो कि अजमेर तथा दिल्ली का राजपूत शासक था के मध्य हुई। इस लड़ाई में मुहम्मद गौरी को पराजय का सामना करना पड़ा था। निस्संदेह यह पृथ्वीराज चौहान तृतीय की एक महान् सफलता थी।

(क) तराइन की प्रथम लड़ाई के कारण

तराईन की प्रथम लड़ाई के लिए अनेक कारण उत्तरदायी थे इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार हैं।

1 साम्राज्य का विस्तार :→ मुहम्मद गौरी एक महत्वाकांक्षी शासक था। वह गजनी के अपने छोटे से राज्य से संतुष्ट नहीं था। अतः वह भारत पर अधिकार करके अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था इस उद्देश्य से उसका दिल्ली

पर अधिकार तभी हो सकता था यदि वह पहले हरियाणा पर अधिकार करें।

2. भारतीय शासकों की आपसी फूट :→ पृथ्वी राज चौहान की बढ़ती हुई शक्ति के कारण भारत के अन्य शासक उससे ईर्ष्या करने लगे कन्नौज का शासक जयचंद राठौर पृथ्वीराज चौहान का विनाश देखना चाहता था इसका कारण यह था कि वह पृथ्वीराज चौहान की बढ़ती हुई शक्ति को सहन करने को तैयार न था इस प्रकार मंदौर का शासक भी पृथ्वीराज चौहान से काफी नाराज था।

3. इस्लाम का प्रसार :→ मुहम्मद गौरी भारत में इस्लाम का प्रसार करने का इच्छुक था ऐसा करके एक तरफ जहां वह मुसलमानों का सहयोग प्राप्त कर सकता था तथा दूसरी तरफ वह इतिहास में अपने नाम को सदैव के लिए अमर कर सकता था। अतः उसने यह स्पष्ट किया कि वह भारत से मूर्ति पूजा का अंत करना चाहता है। दूसरी ओर पृथ्वीराज चौहान मुहम्मद

गौरी के इस्लाम प्रसार के मार्ग में मुख्य बाधक था वह भारत में इस्लाम की स्थापना को सहन करने को तैयार न था।

4. भारत की दौलत :→ भारत प्राचीनकाल से ही विश्व में सोने की चिड़िया कहलाता था। हरियाणा की गणना भी भारत के सबसे समृद्ध प्रदेशों में की जाती थी मुहम्मद गौरी यहां से धन लूटकर अपनी स्थिति को अधिक सुदृढ़ करना चाहता था।

5. तात्कालिक कारण :→ 1189 ई० में मुहम्मद गौरी द्वारा तावरहिंद पर अधिकार मुहम्मद गौरी तथा पृथ्वीराज चौहान के मध्य लड़ाई का तात्कालिक कारण बना। तावरहिंद पर पृथ्वीराज चौहान का अधिकार था तावरहिंद कौन-सा प्रदेश था इस संबंध में इतिहासकारों में मतभेद है कुछ इसे भटिंडा तथा कुछ अन्य इसे सरहिंद बताते हैं। मुहम्मद गौरी ने इस पर अचानक आक्रमण करके राजपूती सेना को पराजित कर दिया था।

(ख) तराइन की प्रथम लड़ाई की घटनाएँ →

पृथ्वीराज चौहान जो इस समय दिल्ली में था एक विशाल सेना के साथ मुहम्मद गौरी की सेना का मुकाबला करने के लिए चल पड़ा। इस समय हाँसी का गवर्नर गोविंद राय अथवा खांडे राय था। वह पृथ्वीराज चौहान का भाई था। वह भी शत्रु का मुकाबला करने के लिए अपने भाई के साथ हो लिया। इतिहासकार फरिश्ता ने पृथ्वीराज चौहान की सेना की संख्या दो लाख घुड़सवार तथा तीन हजार हाथी बताई हैं। किंतु यह संख्या काफी अधिक है। वास्तव में पृथ्वीराज चौहान के सैनिकों की संख्या लगभग एक लाख थी लगभग इतने ही सैनिक मुहम्मद गौरी के अधीन थे अतः दोनों के मध्य मुकाबला बराबर का था।

1191 ई० में दोनों सेनाओं का मुकाबला करनाल के निकट तराइन के मैदान में हुआ दोनों के मध्य युद्ध बहुत भयंकर था। राजपूती सेना के आगे मुहम्मद गौरी की सेना टिक नहीं पा रही थी। इसी समय मुहम्मद गौरी ने सेना का संचालन कर रहे गोविंद राय पर एक जोरदार प्रहार किया।

(ग) तराइन की प्रथम लड़ाई के प्रभाव

तराइन की प्रथम लड़ाई का भारतीय इतिहास में अनेक दृष्टिकोणों से विशेष महत्व है। प्रथम, इस लड़ाई में पृथ्वीराज चौहान की विजय से उसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई, दूसरा इस लड़ाई में राजपूती सेना ने अपनी बहादुरी के वे जौहर दिखाए कि तुर्क सेना को दिन में तारे नजर आ गए, तीसरा इस लड़ाई में विजय के परिणामस्वरूप राजपूती सेना ने पुनः तबर हिंद पर अधिकार कर लिया था।

2. तराइन की दूसरी लड़ाई 1192 ई० →

1192 ई० में (मुहम्मद) मुहम्मद गौरी एवं पृथ्वीराज चौहान तृतीय के मध्य तराइन की दूसरी लड़ाई हुई। इस लड़ाई में पृथ्वीराज चौहान को पराजय का सामना करना पड़ा। जबकि मुहम्मद गौरी को सफलता प्राप्त हुई। तराइन की दूसरी लड़ाई के दूरगामी प्रभाव पड़े इसने भारत के भविष्य को अंधकारमयी बना दिया।

(क) तराइन की दूसरी लड़ाई के कारण

पृथ्वीराज चौहान तृतीय एवं मुहम्मद गौरी के मध्य तराइन की दूसरी लड़ाई के लिए अनेक कारण उत्तरदायी थे इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।

1. मुहम्मद गौरी की पराजय :→ प्रथम तराइन युद्ध में मुहम्मद गौरी अपनी पराजय से तिलमिला उठा था वह अपने इस अपमान को सहन करने को तैयार नहीं था उसने गजनी वापस पहुंच कर इन सैनिकों एवं सरदारों को कठोर दंड दिए जिन्होंने तनिक भी लापरवाही की थी। उसने अपनी सेना को पुनर्गठित किया तथा कठोर अनुशासन पर बल दिया।

2. तबरहिंद की विजय :→ तबरहिंद पर पृथ्वीराज चौहान का अधिकार था 1189 ई० में मुहम्मद गौरी ने इस पर सुगमता से अधिकार कर लिया था। मुहम्मद गौरी ने तबरहिंद की सुरक्षा के लिए जियाउद्दीन तोलक को नियुक्त किया। पृथ्वीराज चौहान इसे सहन

करने को तैयार नहीं था। अतः उसने 1191 ई० में तराइन की प्रथम लड़ाई में विजय के पश्चात तबरहिंद पर आक्रमण कर दिया।

3. जयचंद राठौर का निमंत्रण :→ जयचंद्र राठौर कन्नौज का शासक था उसे पृथ्वीराज चौहान की बढ़ती हुई शक्ति फूटी आँख नहीं भाती थी। पर दूसरी ओर उसकी पुत्री संयोगिता पृथ्वीराज चौहान के पराक्रम को देखते हुए उसे मन ही मन प्यार करने लगी थी। जयचंद राठौर ने पृथ्वीराज चौहान को नीचा दिखाने के उद्देश्य से संयोगिता के स्वयंवर में उसे न्योता नहीं दिया।

(ख) तराइन की दूसरी लड़ाई की घटनाएँ :→ 1192 ई० में मुहम्मद गौरी ने 120,000 सैनिकों के साथ भारत की ओर कूच किया। शीघ्र ही वह तराइन के उसी मैदान में पहुंच गया जहां उसे प्रथम लड़ाई के दौरान पराजय का सामना करना पड़ा था। मुहम्मद गौरी ने अपनी सेना को पाँच भागों में विभाजित किया।

उसने 12,000 सैनिकों का एक भाग पीछे आरक्षित रखा। इसका कार्य आवश्यकता पड़ने पर शत्रु पर आक्रमण करना था। मुहम्मद गौरी स्वयं केंद्रीय सेना का नेतृत्व कर रहा था इसका कार्य आवश्यकता पड़ने पर शत्रु पर आक्रमण करना था मुहम्मद गौरी स्वयं केंद्रीय सेना का नेतृत्व कर रहा था। दाहिनी ओर की कमान उल्लाह संभाले हुआ था खारवक अग्रिम दस्ते का नेतृत्व कर रहा था। मुकलना बाएं पक्ष का नेतृत्व कर रहा था।

दूसरी ओर पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गौरी के आगमन की सूचना पाकर राजपूतों को अपनी स्वतंत्रता के लिए एक ध्वज के नीचे एकत्र होने का आह्वान किया।

(ग) तराइन की दूसरी लड़ाई के प्रभाव :→

तराइन की दूसरी लड़ाई भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण लड़ाइयों में से एक थी। इसके दूरगामी परिणाम निकले। प्रथम इस लड़ाई में पराजय के कारण राजपूतों

एवं विशेष रूप से चौहानों की शक्ति को गहरा आघात लगा। दूसरा इस लड़ाई में पराजय के कारण पश्चात् भारत में हिंदुओं के प्रभुत्व के युग का अंत हुआ तथा मुस्लिम राज्य की स्थापना का मार्ग खुल गया। तीसरा, तराइन की लड़ाई में हुई भयंकर लूटमार के कारण हरियाणा की जन-धन की अपार हानि हुई। चौथा, पृथ्वीराज चौहान भारत में इस्लाम के प्रसार के मार्ग में एक बड़ी बाधा था।

प्रश्न → जार्ज थॉमस कौन था? उसने हरियाणा पर अपना राज्य कैसे स्थापित किया?

उत्तर → भूमिका :→

18 वीं शताब्दी के हरियाणा के इतिहास में जिन व्यक्तियों ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई उनमें जॉर्ज थॉमस अथवा जॉर्ज टॉमस का महत्व पूर्ण स्थान है। वह आयरलैंड के एक निर्धन परिवार से संबंधित था उसने अपने जीवन का आरंभ एक साधारण नाविक से किया था 1787 में बेगम समरू की सेना में भर्ती होना उसके जीवन में एक स्वतंत्र शासन स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। निस्संदेह यह उसके जीवन का सबसे महान कारनामा था। उसने प्रजा की भलाई संघर्ष में उलझा पड़ा।

1. आरंभिक जीवन :→ जॉर्ज थामस का जन्म 1756 ई० में आयरलैंड के पास टिप्पेरेरी नामक स्थान पर एक निर्धन परिवार में हुआ। इस कारण वह शिक्षा प्राप्त करने से भी वंचित रहा। उसे बचपन से ही अपने

जीवन के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। उसने अपना जीवन एक साधारण नाविक के रूप में शुरू किया। नाव चलाते चलाते ही उसने बहुत ऊंचे सपने देखने शुरू कर दिए थे वह इन्हें पूरा करने के उद्देश्य से 1782 ई० में एक ब्रिटिश समुद्री जहाज के साथ मद्रास पहुँचा उसने यहीं रहने का निर्णय किया।

2. टप्पल के एक कलैक्टर के रूप में :→ बेगम समरू जॉर्ज थॉमस की योग्यता से इतनी प्रभावित हुई थी कि उसे टप्पल जो कि अलीगढ़ के निकट स्थित था का कलैक्टर नियुक्त कर दिया। जॉर्ज थॉमस ने इस पद पर रहते हुए अपनी योग्यता का खूब परिचय दिया। उसने विद्रोहियों का सख्ती से दमन किया।

3. जॉर्ज थॉमस का विद्रोह :→ जॉर्ज थॉमस एवं फ्रांसीसी सैनिकों के मध्य मतभेद उत्पन्न हो गए। 1792 ई० में इसका कारण यह था कि फ्रांसीसी सैनिकों को जॉर्ज थॉमस का तीव्रता से बढ़ता हुआ प्रभाव फूटी आँख नहीं भाता था। उनका नेता लेवासी

अपने प्रेम संबंधों के कारण बेगम समरू के बहुत निकट था इसका लाभ उठाकर उसने बेगम समरू को जॉर्ज थॉमस के विरुद्ध भड़का दिया। बेगम समरू लेवासी के बहकावे में आ गई। अतः उसने जॉर्ज थॉमस को सेवा मुक्त होने का आदेश दिया।

4. आपा खांडेराव की सेवा में :→

आपा खांडेराव मराठों का मेवात प्रांत में सूबेदार था। अक्टूबर 1793 ई० में आपा खांडेराव ने जॉर्ज थॉमस को अपनी सेवा में ले लिया। उसने मेवात क्षेत्र में व्यवस्था लागू करने की जिम्मेदारी जॉर्ज थॉमस को सौंपी। यहां के कृषक सदैव बगावती प्रवृति के रहे थे। वे किसी को भी भू-राजस्व अदा नहीं करते थे। जॉर्ज थॉमस ने शक्ति के बल पर मेवात के कृषकों को भू-राजस्व देने के लिए बाध्य किया।

5. जॉर्ज थॉमस हरियाणा के राजा के रूप में :→

जून 1797 ई० में आपा खांडेराव की यमुना नदी में डूबकर मृत्यु हो गई थी वामन राव को उसका उत्तराधिकारी बनाया गया।

उसके समय मराठों एवं जॉर्ज थॉमस के मध्य मतभेद उत्पन्न हो गए। अतः जॉर्ज थॉमस ने पुनः लूटमार की नीति को अपना लिया उसने 1798 ई० तक खाड़ी, दिल्ली, करनाल एवं पटियाला के दक्षिण प्रदेश पर अधिकार कर अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। उसने हाँसी को अपनी राजधानी घोषित किया। जॉर्ज थॉमस ने जो राज्य स्थापित किया वह अंडाकार आकार का था इसकी सीमाएं निश्चित नहीं थी। जो सिखों के प्रदेशों से इसे अलग करती थी।

6. सिखों के विरुद्ध संघर्ष :→

जॉर्ज थॉमस बहुत महत्वाकांक्षी था वह अपने राज्य का अधिक विस्तार करना चाहता था इस उद्देश्य से उसने सर्वप्रथम पंजाब को चुना। जींद का शासक भाग सिंह जॉर्ज थॉमस के बढ़ते हुए प्रभाव को सहन करने को तैयार नहीं था। 1798 ई० में अफगानिस्तान के शासक भाग सिंह जमान ने पंजाब पर आक्रमण कर दिया था। अतः पंजाब के सिख शाह जमान के साथ व्यस्त थे यह स्वर्ण अवसर

देखकर जॉज थॉमस ने जींद पर आक्रमण कर दिया। जींद के शासक भाग सिंह ने अपने 3,000 सैनिकों के साथ जॉर्ज थॉमस का डट कर मुकाबला किया। जॉज थॉमस के 400 सैनिक मारे गए।

7. जॉर्ज थॉमस के विरुद्ध संघ एवं उसकी मृत्यु :→ बीबी साहिब कौर द्वारा जॉर्ज थॉमस के साथ सौदेबाजी करने पर उसके भाई साहिब सिंह को बहुत गुस्सा आया। अतः उसने बीबी साहिब कौर द्वारा अपनी बहन को कारागार में डाल दिया। जॉज थॉमस एक वीर स्त्री के साथ इस प्रकार के अपमानजनक व्यवस्था को बहन को छोड़ दिया था।

प्रश्न → सतनामी कौन थे? इनके विद्रोह के कारण, घटना और परिणाम, महत्व का वर्णन कीजिए?

उत्तर → भूमिका :→ ई० में नरनौल के सतनामियों द्वारा 1672 किया गया विद्रोह औरंगजेब के शासनकाल की एक महत्वपूर्ण घटना है। इस विद्रोह के एक बार तो मुगलों को दिन में तारे दिखा दिए थे यद्यपि यह विद्रोह अंततः विफल रहा किंतु इसके हरियाणा के इतिहास दूरगामी प्रभाव पड़े।

सतनामी कौन थे

सतनामी हिंदुओं का एक धार्मिक संप्रदाय था। इस संप्रदाय की स्थापना 1543 ई० में बारियान ने नरनौल के समीप बिजेसर में की थी। इस संप्रदाय के लोग ईश्वर के सच्चे नाम की उपासना पर बल देते थे इसलिए वे सतनामी कहलाए। क्योंकि सतनामी अपने सिर के बाल, दाढ़ी, मूंछ और भौंह तक मुंडवा देते थे इसलिए उन्हें मुंडियां भी कहा जाता था सतनामी ईश्वर की एकता में विश्वास रखते थे। वे समाज में प्रचलित

अंध - विश्वासों के विरुद्ध थे। वे बहुत बहादुर एवं मेहनती लोग थे। वे मुख्यतः कृषि एवं व्यापार का कार्य करते थे। वे बहुत ईमानदार एवं सादा जीवन व्यतीत करते थे। वे गरीब लोगों से हमदर्दी तथा अमीर लोगों से घृणा करते थे अतः इस संप्रदाय में सम्मिलित होने वाले अधिकांश लोग गरीब एवं निम्न वर्गों से संबंधित थे।

विद्रोह के कारण

सतनामियों के विद्रोह के लिए मुख्यतः औरंगजेब की धार्मिक एवं आर्थिक नीतियाँ उत्तरदायी थी इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।

1. औरंगजेब की धार्मिक नीति :→

1658 ई० में औरंगजेब के सिंहासनरूढ़ होने के साथ ही भारत में मुगल साम्राज्य के इतिहास का सबसे अंधकारमयी अध्याय आरंभ हुआ औरंगजेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था अतः वह भारत में इस्लाम के सिवाए किसी अन्य धर्म के अस्तित्व को सहन नहीं कर सकता था उसके

जीवन का मुख्य उद्देश्य दार-उल-हर्ब को दार-उल-इस्लाम में परिवर्तित करना था उसने तलवार के बल पर हिंदुओं को इस्लाम में सम्मिलित किया। इंकार करने वाले को मौत के घाट उतार दिया जाता। भारत के अन्य भागों की तरह हरियाणा में भी मंदिरों का विनाश किया गया एवं मूर्तियों का अपमान किया। गया हिंदुओं को राज्य के सभी पदों से हटा दिया गया।

2. औरंगजेब की आर्थिक नीति :→ औरंगजेब की आर्थिक नीति भी सतनामियों के विद्रोह के लिए काफी सीमा तक उत्तरदायी थी 1658 ई० में हरियाणा समेत संपूर्ण भारत भंयकर अकाल की चपेट में आ। इस कारण लाखों लोग मृत्यु का ग्रास हो गए थे। संकट के इस समय में औरंगजेब ने भू-राजस्व एवं अन्य करों को बढ़ाकर अग्नि में घी डालने का कार्य किया। औरंगजेब ने मुसलमानों को इन करों से मुक्त रखा था या उनकी दर बहुत कम थी जागीरदार भी किसानों का घोर शोषण करते थे।

किसानों को दिन भर मेहनत करने के बावजूद दो वक्त भर पेट खाना नसीब नहीं होता था। सतनामी जोकि अधिकाँश किसान थे जो औरंगजेब की आर्थिक नीति के चलते बहुत परेशान थे। अतः उन्होंने इसका विरोध करने का निर्णय किया।

3. तात्कालिक कारण :→ एक साधारण घटना ने 1672 ई० में एक ज्वाला का रूप धारण कर लिया। इस वर्ष एक मुगल सैनिक एवं एक सतनामी में किसी बात को लेकर आपसी झगड़ा हो गया उस मुगल सैनिक ने गुस्से में आकर उस सतनामी के सिर पर लाठी दे मारी। सतनामी के शोर मचाने पर बहुत से सतनामी घटना स्थल पर एकत्र हो गए। उन्होंने उस मुगल सैनिक को तब तक पीटा जब तक कि वह यमलोक नहीं पहुँच गया। स्थानीय मुगल शिकदार इस घटना को सहन करने को तैयार नहीं थे अतः उसने सतनामियों को सबक सिखाने के लिए एक मुगल सेना को

भेजा। सेनापति सतनामी जो नदी संरक्षा में पहले ही वहां एकत्र हो चुके थे मुगल सेना को करारी पराजय दी। इस प्रकार सतनामियों ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजा दिया।

विद्रोह की घटनाएँ

सतनामियों के विरुद्ध विद्रोह एवं मुगलों की पराजय की सूचना जंगल में आग की तरह फैल गई सतनामी सिर पर कफन बांधे एक ध्वज के अधीन एकत्र हो गए। इसी समय भविष्यवाणी बतलाने वाली एक बूढ़ी औरत ने यह घोषणा की कि, "वह ऐसा मंत्र पढ़ेगी कि उसके ध्वज के नीचे लड़ने वाले सतनामियों पर शत्रु के शस्त्रों का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा और यदि किसी कारण कोई सतनामी मारा भी गया तो उसके स्थान पर 80 सतनामी खड़े हो जाएंगे"।

उसकी इस योजना ने सतनामियों में एक नव-स्फूर्ति का संचार किया। शीघ्र ही 5,800

सतनामी एकत्र हो गए। इनमें बड़ी संख्या में स्त्रियाँ भी सम्मिलित थी। सतनामियों ने शीघ्र ही नरनौल के फौजदार कर्तलब खाँ को पराजित किया। कर्तलब खाँ इस युद्ध में मारा गया। इसके पश्चात् सतनामियों ने नरनौल पर अधिकार कर वहाँ भयंकर लूटमार की। सतनामियों ने अनेक मस्जिदों को नष्ट कर दिया। उन्होंने नगर की शासन व्यवस्था को अपने हाथों में ले लिया। उन्होंने अनेक सैनिक चौकियाँ स्थापित की तथा किसानों से भू-राजस्व वसूल किया। इस प्रकार नरनौल में मुगल सत्ता का अंत हो गया।

विद्रोह का महत्व

औरंगजेब के शासनकाल में हुए सतनामियों के विद्रोह का मध्यकालीन भारतीय इतिहास में विशेष महत्व है। यद्यपि औरंगजेब विशाल साधनों का स्वामी था। किंतु इसके बावजूद उसे सतनामियों के विद्रोह के दमन के लिए अनेक

कठिनाईयों के दौरान सतनामियों ने अपनी बहादुरी के वे जौहर दिखाए कि एक बार तो मुगलों को नानी याद आ गई। सतनामियों का अनुसरण करते हुए जाटों, सिखों एवं मराठों ने भी विद्रोह के मार्ग को अपनाया। इन विद्रोहों ने महान् मुगल साम्राज्य की नींव को डगमगा दिया।

एस० एन० फड़के के अनुसार, "

इस प्रकार

इस क्षेत्र के सबसे शानदार लोकप्रिय विद्रोह का जो औरंगजेब के अत्याचारी शासन के विरुद्ध हुआ था का अंत हुआ यद्यपि यह विनाश के पश्चात् योग्य नेता देने में विफल रहा। किंतु इसने क्षेत्र के अन्य लोगों के लिए काफी लंबे समय तक अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष जारी रखने का मार्ग प्रशस्त किया।

UNIT=3

प्रश्न → 1857 की क्रांति के कारण, परिणाम, प्रभाव का वर्णन कीजिए?

उत्तर → **भूमिका** :→ 1857 ई० में भारत में अंग्रेजों के विरूद्ध एक महान् विद्रोह हुआ। इस विद्रोह में हरियाणा के लोगों की प्रशंसनीय भूमिका निभाई। इस बात का गौरव हरियाणा के लोगों को प्राप्त है कि उन्होंने सर्वप्रथम 1857 ई० के विद्रोह का झंडा बुलंद किया। हरियाणा के लोगों में अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति, अंग्रेजों द्वारा हरियाणा में शताब्दियों से स्थापित पंचायतों के अंत, लोगों के आर्थिक शोषण, ईसाई मिशनारियों के प्रचार, लोगों के साथ अंग्रेजों द्वारा किए जाने वाले दुर्व्यवहार, हरियाणा में फैले भयंकर अकालों तथा महामारियों के दौरान लोगों के कष्टों की ओर सरकार द्वारा कोई ध्यान न देना, त्रुटिपूर्ण न्याय प्रणाली, सैनिकों में व्याप्त असंतोष के कारण बहुत रोष था। इस विद्रोह में हरियाणा के लोगों ने क्यों भाग लिया इसके लिए अनेक कारण उत्तरदायी थे

इनका वर्णन निम्न अनुसार है।

1. **अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति** :→ अंग्रेजों द्वारा भारत में अपनाई गई साम्राज्यवादी नीति 1857 ई० के विद्रोह का एक प्रमुख कारण बनी। इस साम्राज्यवादी नीति का आरंभ लॉर्ड क्लाइव ने प्लासी तथा बक्सर की लड़ाइयों में विजय पाकर किया था। उसके पश्चात् भारत आने वाले सभी गवर्नर जनरलों में भारतीय क्षेत्रों को हड़पने की एक होड़ सी लग गई। 1798 ई० में लॉर्ड वेलेजली ने सहायक संधि नीति को अपनाया। उसने 1805 ई० में ग्वालियर के मराठा सरदार दौलत राव सिंधिया से सुर्जी अर्जुनगाँव नामक संधि करके हरियाणा का प्रदेश प्राप्त कर लिया।

2. **हरियाणा में पंचायतों का अंत** :→ प्राचीन काल से ही हरियाणा में पंचायतों का गाँवों के विकास में उल्लेखनीय योगदान रहा है। गाँव के लोग कुछ न्यायप्रिय, निष्पक्ष एवं बुद्धिमान बुजुर्गों को पंचायत का सदस्य चुनते

थे वे पंच को परमेश्वर समझते थे उनसे किसी प्रकार के अन्याय की आशा नहीं की जाती थी। पंचायत गाँवों में शांति व्यवस्था बनाए रखने, कृषि का विकास करने, सड़कों एवं सिंचाई साधनों का विकास करने, का निपटारा करती थी पंचायत किसी के बीमार होने पर एवं विधवा को यथा संभव सहायता देती थी।

3. **आर्थिक शोषण :->** अंग्रेजों द्वारा हरियाणा के किए जाने वाले भयंकर आर्थिक शोषण के वहाँ के लोग सहन करने को तैयार नहीं थे। हरियाणा के लगभग 90% लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। अंग्रेजों ने इसके विकास के लिए कोई ध्यान नहीं दिया। दूसरी ओर उसने किसानों से लिए जाने वाले भू-राजस्व में बहुत वृद्धि कर दी। सरकार द्वारा किसानों से यह भू-राजस्व जबरन वसूल किया जाता था। इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है। कि करनाल में भू - राजस्व

एकत्र करने के लिए 136 घुड़सवार सैनिकों को लगाया गया था। जबकि शहर में शांति व्यवस्था के लिए केवल 22 सैनिकों की व्यवस्था की गई थी।

4. **ईसाई मिशनारियों का प्रचार :->** अंग्रेजों ने हरियाणा पर 1803 ई० में अधिकार कर लिया था। 1813 ई० के चार्टर मिशनारियों को प्रचार की अनुमति मिल गई थी। अतः बड़ी संख्या में ईसाई मिशनरी हरियाणा पहुँचने लगे। उन्होंने दिल्ली एवं अंबाला में अपने मुख्यालय बनाए। यहाँ की ब्रिटिश सरकार ने इन ईसाई मिशनरियों को यथा संभव सहयोग दिया उनकी सुरक्षा हेतु पुलिस कर्मचारी भी दिए गए थे। ये ईसाई मिशनरी, स्कूलों, कॉलेजों, अस्पतालों, मंदिरों, जेलों, बाजारों में जाकर ईसाई धर्म का प्रचार करते थे।

5. **हरियाणा के लोगों के साथ दुर्व्यवहार :->** अंग्रेजों द्वारा हरियाणा के लोगों के साथ किया जाने

वाला दुर्व्यवहार 1857 ई० के विद्रोह का एक महत्वपूर्ण कारण बना। अंग्रेज अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को श्रेष्ठ मानते थे। उन्होंने हरियाणा की सभ्यता एवं ईमानदारी पर विश्वास नहीं था। अतः हरियाणा के लोगों का प्रत्येक प्रकार के अधिकारों एवं उच्च पदों से वंचित किया गया था।

6. **अकालों तथा महामारियों का फैलना :->** ब्रिटिश शासनकाल में हरियाणा में भयंकर अकाल पड़े। एवं महामारियाँ फैली 1803 – 1804 ई० में अंग्रेजों द्वारा हरियाणा की सत्ता संभालते ही भयंकर अकाल पड़ा इसके पश्चात् 1813 -14 से 1851 -52 में अकालों ने हरियाणा को अपनी चपेट में ले लिया। इन अकालों के दौरान बड़े पैमाने पर फसलें बर्बाद हो गई। खाद्यानों की कमी के कारण, उनके दमन, दाम आसमान को छूने लगे। इन अकालों के दौरान बड़ी संख्या में लोग एवं पशु मारे गए।

7. **त्रुटिपूर्ण न्याय प्रणाली :->** अंग्रेजों द्वारा हरियाणा में लागू किए गए त्रुटिपूर्ण न्याय प्रणाली के कारण यहाँ के लोगों में बहुत रोष था उनके शासन से पूर्व हरियाणा में जो न्याय प्रणाली प्रचलित थी उससे लोग बहुत संतुष्ट थे। इसमें गाँव की पंचायतों की उल्लेखनीय भूमिका थी। इनके द्वारा लोगों को सस्ता, तुरंत एवं निष्पक्ष न्याय दिया जाता था अंग्रेजों ने हरियाणा में जो न्याय व्यवस्था लागू की वह भ्रष्ट, खर्चीली एवं विवेकाधीन थी। अंग्रेजों द्वारा लागू किए गए कानून लोगों की समझ से बाहर थे।

8. **सैनिकों में व्याप्त असंतोष :->** ब्रिटिश शासनकाल में हरियाणा के सैनिकों में अनेक कारणों से असंतोष फैला हुआ था। हरियाणा के सैनिकों को यूरोपीय सैनिकों के मुकाबले बहुत हीन समझा जाता था। हरियाणा के सैनिकों के वेतन एवं भत्ते यूरोपीय सैनिकों

की उपेक्षा बहुत कम थे। हरियाणा के सैनिकों को बहुत कम पदोन्नत किया जाता था। वे अधिक से अधिक सूबेदार के पद तक पहुँच सकते थे। अंग्रेज सैनिक हरियाणा के सैनिकों का बहुत अपमान करते थे। 30 वर्षों तक निष्ठापूर्वक नौकरी करने के बावजूद हरियाणा के सैनिकों को एक नए भर्ती अंग्रेज सैनिकों को सलाम करना पड़ता था।

9. तात्कालिक कारण :→ चर्बी वाले कारतूस ई० के विद्रोह का तात्कालिक कारण बने। 1856 ई० में अंग्रेजों ने ब्राउन बेस राइफल की जगह भारतीयों को एनफील्ड राइफल देने का निर्णय किया इन राइफलों में प्रयोग किए जाने वाले कारतूसों पर गाय तथा सूअर की चर्बी लगी होती थी।

विद्रोह की घटनाएँ

ई० के विद्रोह ने भारत में 1857 ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को लगभग हिलाकर रख दिया था।

यदि अंग्रेज स्थिति पर नियंत्रण पाने में सफल नहीं होते तो उन्हें भारत से गोरियां विस्तार गोल करना पड़ता था। इसकी घटनाएँ निम्नलिखित थी।

1. अंबाला :→ हरियाणा 1857 ई० के विद्रोह का मुख्य केन्द्र था। सर्वप्रथम अंबाला छावनी में बना। अंबाला उन दिनों अंग्रेजों की भारत में सबसे महत्वपूर्ण छावनियों में से एक थी। यहां भारतीय सैनिकों में चर्बी वाले कारतूसों एवं 8 अप्रैल, 1857 ई० को मंगल पांडे को दी गई फाँसी का समाचार जंगल में आग की तरह फैला था। भारतीय सैनिकों ने अंग्रेज अधिकारियों से अपील की कि वे चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग के लिए भारतीयों को बाध्य न करें। पर सत्ता के नशे के कारण अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने की योजना बनाई।

2. गुड़गाँव :→ 13 मई 1857 ई० को मेरठ एवं दिल्ली के 300 विद्रोही

गुडगाँव पर आक्रमण करने के लिए गए। गुडगाँव के कलेक्टर मजिस्ट्रेट विलियम फोर्ड ने इन विद्रोहियों को गुडगाँव से 12 km दूर बिजवसान नामक गाँव में रोकने का प्रयास किया। किंतु वह विफल रहा। इससे प्रोत्साहित होकर इन विद्रोहियों ने 14 मई को गुडगाँव पर आक्रमण कर दिया।

3. **हिसार :→**

1857 ई० के विद्रोह में हिसार ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई। यहाँ विद्रोह की शुरुआत मई के तीसरे सप्ताह में हिसार, हांसी तथा सिरसा में स्थित हरियाणा लाइट इन्फेंट्री के सैनिक दस्तों ने की। शीघ्र ही विद्रोह की ज्वाला सारे हिसार में फैल गयी हिसार में विद्रोहियों का नेतृत्व दिल्ली के राजघराने से संबंधित शाहजादा मुहम्मद आज़िम ने किया। अंग्रेज अधिकारी हिसार में विद्रोहियों की बढ़ती हुई गतिविधियों को सहन करने को तैयार न थे।

4. रोहतक 5. पानीपत
6. थानेसर 7. नारनौल की लड़ाई।

विद्रोह की विफलता के कारण →

1857 ई० के विद्रोह में यद्यपि हरियाणा के लोगों ने उल्लेखनीय योगदान दिया था किंतु अनेक कारणों के चलते यह विद्रोह विफल रहा। इसके अनेक कारण उत्तरदायी थे।

1. **विद्रोह का समय से पूर्व प्रारंभ :→**

1857 ई० के विद्रोह की विफलता का प्रमुख कारण इसका समय से पूर्व आरंभ होना था इस विद्रोह के लिए 31 मई की तारीख निश्चित की गई थी। इस योजना के अनुसार सभी तैयारियाँ चल रही थीं कि 10 मई को अंबाला एवं मेरठ के विद्रोहियों ने आवेश में आकर समय से पहले ही बगावत का झंडा बुलंद कर दिया।

2. **अच्छे नेताओं की कमी :→** हरियाणा के लोग अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर

करने के लिए तैयार थे दुर्भाग्यवश विद्रोहियों का नेतृत्व करने के लिए अनुभवी एवं अच्छे नेताओं का अभाव था।

3- **सीमित साधन :->** हरियाणा में 1857 ई० के विद्रोह की विफलता का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण यहाँ के विद्रोहियों के पास सीमित साधनों का होना था यहाँ के विद्रोही न तो अच्छी प्रकार प्रशिक्षित थे तथा उनके पास हथियारों एवं गोला - बारूद की बहुत कमी थी।

4. **अंग्रेजों के अत्याचार :->** किसी भी विद्रोह की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उसे समाज के सभी वर्गों का सहयोग प्राप्त हो। 1857 ई० के विद्रोह के लिए यह नितांत आवश्यक था।

5. अंग्रेजों को सहयोग।
6. दिल्ली पर अधिकार।
7. अंग्रेजों की क्रूरनीति।

1857 ई० के विद्रोह के प्रभाव

1857 ई० का विद्रोह यद्यपि अपने उद्देश्य में विफल रहा किंतु इसके हरियाणा के इतिहास पर दूरगामी प्रभाव पड़े इन प्रभावों का वर्णन निम्न-लिखित अनुसार है।

पंजाब में विलय।

1. प्रादेशिक परिवर्तन।
2. आतंक का शासन।
3. हरियाणा का पिछड़ापन।
4.

1857 ई० के विद्रोह का स्वरूप :->

हरियाणा में 1857 ई० के विद्रोह का वास्तविक स्वरूप क्या था? इस संबंध में यहाँ बता देना आवश्यक है कि इसे हमें भारत के परिपेक्ष में जानना होगा। क्योंकि एक छोटे से प्रदेश से हम इस जटिल प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते। इतिहासकार प्रथम दो विचारों को ही महत्वपूर्ण मानते हैं। इसलिए यहाँ इन दोनों का आलोचनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

पहला विचार - सैनिक विद्रोह

सर जॉन लारेंस, मार्शमैन, सीले, पी॰ई॰ रावर्ट्स जैसे इतिहासकारों का विचार है कि 1857 ई॰ का विद्रोह एक सैनिक विद्रोह से बढ़कर और कुछ नहीं था।

1. विद्रोह के मुख्य कारण सैनिक थे।
2. विद्रोह का तात्कालिक कारण चर्बी वाले कारतूस थे।
3. प्रत्येक स्थान पर पहले सैनिकों ने विद्रोह किया और बाद में असंतुष्ट देशी शासक उनके साथ आ मिले।
4. इस विद्रोह में जन-साधारण तथा कृषकों ने बहुत कम भाग लिया।
5. यह विद्रोह पूरे भारत में नहीं फैला।

आलोचना

1. 1857 का विद्रोह को केवल एक सैनिक विद्रोह समझना उन लोगों के साथ सरासर अन्याय होगा जिन्होंने इस विद्रोह में बढ़-चढ़ कर भाग लिया।
2. यदि यह सैनिक विद्रोह होता तो पूरे भारत के सैनिक इसमें अवश्य

भाग लेते।
3. यदि यह केवल एक सैनिक विद्रोह होता तो अंग्रेजों ने केवल सैनिकों को ही सजाएं देनी थी।
4. कुछ स्थानों पर सैनिकों के विद्रोह से पहले जन-साधारण ने विद्रोह कर दिया था।

दूसरा विचार - प्रथम स्वतंत्रता संग्राम :→ वीर सावरकर, अशोक मेहता, पट्टाभि सीतारमैय्या आदि इस विद्रोह को भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मानते हैं।

1. यदि इसमें जन-साधारण ने भाग न लिया होता तो यह विद्रोह इतनी तीव्रता से सारे भारत में न फैलता।
2. यह विद्रोह भारतीयों में 100 वर्षों के ब्रिटिश शासन से उत्पन्न हुए असंतोष एवं अशांति का परिणाम भी।
3. नाना साहब, तात्या टोपे, बहादुरशाह आदि सैनिकों के पूर्व ही विद्रोह करने की योजना तैयार की थी।
4. इस विद्रोह में हिंदुओं तथा मुसलमानों ने कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजों का मुकाबला किया।

आलोचना

1. यह विद्रोह उत्तरी तथा मध्य भारत के कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित था।
2. इस विद्रोह के सभी नेता अपने-2 स्वार्थी हितों के लिए लड़ रहे थे।
3. बहुत से देशी शासकों ने इस विद्रोह को कुचलने में अंग्रेजों को अपना समर्थन दिया।

निष्कर्ष :→

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 1857 ई० का विद्रोह आरंभ में केवल सैनिकों का विद्रोह था परंतु बाद में शासकों तथा जन साधारण द्वारा बढ़-चढ़कर भाग लेने से यह महान् विद्रोह का रूप धारण कर गया। सच तो यह है कि 1857 ई० का विद्रोह निश्चित रूप से स्वतंत्रता की भावना से प्रेरित था और अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने का प्रथम सम्मिलित प्रयास था।

प्रश्न→ सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए?

उत्तर→ भूमिका :→

महात्मा गाँधी जी द्वारा चलाए गए सविनय अवज्ञा आंदोलन को हरियाणा के इतिहास में विशेष स्थान प्राप्त है। यह आंदोलन 1930 ई० से 1934 ई० तक चलता रहा। इस आंदोलन में हरियाणा के लोगों ने उल्लेखनीय योगदान दिया। यह आंदोलन लोगों के नैतिक मनोबल को ऊँचा उठाने सरकार के राजनीतिक गर्व को समाप्त करने में काफी सीमा तक सफल रहा।

1. सविनय अवज्ञा आंदोलन के कारण

महात्मा गाँधी जी द्वारा 1930 ई० में सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने के लिए अनेक कारण उत्तरदायी थे इन कारणों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित अनुसार है।

साइमन कमीशन का बहिष्कार :→

1. में इंग्लैंड की मजदूर पार्टी 1927 ई० की सरकार ने 1919 ई० के सुधार

अधिनियम की समीक्षा तथा संवैधानिक सुधारों पर आगे विचार करने के लिए 8 नवंबर, 1927 ई० को साइमन कमीशन का गठन किया। इस कमीशन का अध्ययन सर जॉन साइमन था। इस कमीशन के सदस्य थे। ये सभी अंग्रेज थे। ब्रिटिश सरकार ने किसी भी भारतीय को इस कमीशन का सदस्य बनना उचित नहीं समझा। इससे भारतीयों के सम्मान को गहरी ठेस पहुँची। अब तक भारत के सभी प्रमुख राजनीतिक दलों ने इस कमीशन के बहिष्कार करने का निर्णय किया। कांग्रेस पार्टी ने दिसंबर 1927 ई० में मद्रास में डॉक्टर अंसारी की अध्यक्षता में हुए अधिवेशन में साइमन कमीशन के बहिष्कार का प्रस्ताव पारित किया।

2. नेहरू रिपोर्ट :→ 1927 ई० में साइमन कमीशन की नियुक्ति के समय भारत मंत्री लॉर्ड बरकनहेड ने अपने एक भाषण में भारतीयों को यह चुनौती दी कि वे एक ऐसा संविधान तैयार करने में असमर्थ हैं जो कि सभी

राजनीतिक दलों को स्वीकार्य हो भारत के राजनीतिक नेताओं ने इस चुनौती को स्वीकार एवं एक संविधान तैयार करने के प्रयास आरंभ कर दिए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए दिल्ली में 12 फरवरी 1928 ई० को 29 राजनीतिक दलों का एक सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन ने पंडित मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक 9 सदस्यों की कमेटी नियुक्त की।

1. भारत को डोमिनियन स्टेट्स औपनिवेशिक राज्य दिया जाए।
2. केन्द्र एवं प्रांतों में उत्तरदायी सरकार की स्थापना की जाए।
3. केंद्र में संसद के दो सदन होने चाहिए।
4. 19 मौलिक अधिकारों की व्यवस्था की जाए।
5. भारत में एक सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना की जाए।

3. कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन :→ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने दिसंबर 1928 ई० में कलकत्ता अधिवेशन में ब्रिटिश सरकार को यह चेतावनी दी गई थी कि यदि उसने एक वर्ष के भीतर नेहरू रिपोर्ट को जिसमें डोमिनियन

स्टेट्स की माँग की गई थी को लागू नहीं किया तो वह पूर्ण स्वराज की माँग करेगी तथा इसे प्राप्त करने के लिए जन आंदोलन शुरू कर देगी।

4. लॉर्ड इर्विन द्वारा गाँधी की शर्तें मानने से इंकार :→ 1929 ई० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस लाहौर में अपने वार्षिक सम्मेलन में किए गए निर्णय के अनुसार 1930 ई० में महात्मा गाँधी जी ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने का निर्णय किया इस आंदोलन को आरंभ करने से पूर्व महात्मा गाँधी जी ने अपने अंतिम प्रयास के रूप में 2 मार्च 1930 ई० को वायसराय लॉर्ड इर्विन को एक पत्र लिखा।

II सविनय अवज्ञा आंदोलन का कार्यक्रम :→ महात्मा गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने के उद्देश्य से एक कार्यक्रम तयार किया। इसकी

महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित थी।

1. जहाँ कहीं भी हो सके नमक कानून का उल्लंघन किया जाए।
2. शराब और विदेशी वस्तुओं की दुकानों के आगे स्त्रियाँ धरने दें।
3. विदेशी वस्त्रों को जला दिया जाए।
4. विद्यार्थियों द्वारा सरकारी शिक्षा संस्थाएँ का बहिष्कार किया जाए।
5. सरकारी कर्मचारी अपनी नौकरियों से त्याग पत्र दें।
6. सरकार को किसी प्रकार का कोई कर न दिया जाए।

III सविनय अवज्ञा आंदोलन का आरंभ :→ महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का आरंभ गुजरात से 386 किलोमीटर की दूरी पर स्थित दाँडी पर स्थित दाँडी नामक गाँव से जो कि समुद्र के किनारे स्थित था नमक कानून का उल्लंघन करके करने का निर्णय किया। इस उद्देश्य से वे 12 मार्च 1930 ई० को साबरमती आश्रम से अपने साथ 78 अन्य साथियों को लेकर उन्हें 24 दिन यात्रा इतिहास में दाँडी

यात्रा के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस यात्रा को पूरा करने के लिए 24 दिन लगे।

IV सविनय अवज्ञा आंदोलन में हरियाणा की भूमिका :→

सविनय अवज्ञा आंदोलन 1930 ई० से 1934 ई० तक दो चरणों में चला। हरियाणा ने इस आंदोलन के दौरान उल्लेखनीय योगदान दिया। इसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार हैं।

1. नमक कानून का उल्लंघन।
2. विदेशी माल का बहिष्कार।
3. करों का बहिष्कार।
4. शिक्षण संस्थाओं, न्यायालयों एवं चुनावों का बहिष्कार।
5. सरकार का दमन।
6. प्रथम गोलमेज सम्मेलन।
7. गाँधी इर्विन समझौता।
8. द्वितीय गोलमेज सम्मेलन।
9. सविनय अवज्ञा आंदोलन को पुनः आरंभ करना।

V सविनय अवज्ञा आंदोलन का महत्व

सविनय अवज्ञा आंदोलन यद्यपि अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में विफल रहा परंतु फिर भी इसने हरियाणा के लोगों में एक नवचेतना का संचार किया। इस आंदोलन में विद्यार्थियों एवं स्त्रियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। इस कारण उनके दृष्टिकोण में भारी परिवर्तन आया। विदेशी वस्त्रों एवं वस्तुओं के बहिष्कार एवं स्वदेशी के प्रचार ने भारतीयों में गर्व की भावना उत्पन्न की। इस आंदोलन के दौरान हरियाणा के लोगों ने जिस शांत भावना से पुलिस के घोर अत्याचारों को सहन किया वह अपने आप में एक अनुपम उदाहरण हैं।

भारत छोड़ो आंदोलन 1942 ई०

भूमिका :→

भारत छोड़ो आंदोलन ने 1942 ई० का केवल भारत संपूर्ण हरियाणा के इतिहास में भी विशेष स्थान रखता हैं। यह भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आरंभ किया गया अंतिम

एवं निस्संदेह सबसे जोरदार आंदोलन था इस आंदोलन के कारण भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव जड़ से हिल गई थी अतः अंग्रेजों को 1947 ई० में भारत छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा।

I. आंदोलन क्यों आरंभ हुआ

1942 ई० के भारत छोड़ो आंदोलन के आरंभ होने के लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी थे।

1. द्वितीय विश्व युद्ध :→ जर्मनी ने 1 सितंबर 1939 ई० को पोलैंड पर आक्रमण कर द्वितीय विश्व युद्ध का बिगुल बजा दिया। 3 सितंबर को इंग्लैंड ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। भारत में ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने भारतीय नेताओं से परामर्श किए बिना ही यह घोषणा कर दी कि इस युद्ध में भारत भी इंग्लैंड का साथ देगा। कांग्रेस के नेताओं ने बातें भारतीयों के लिए घोर अपमान समझा उन्होंने ब्रिटिश सरकार को स्पष्ट किया कि जब तक भारतवर्ष के स्वतंत्रता के अधिकार को स्वीकार नहीं किया जाता।

2. व्यक्तिगत सत्याग्रह :→ भारतीयों में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध फैल रही रोष की लहर को शांत करने के लिए वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने 8 अगस्त 1940 ई० को एक घोषणा की जिसे अगस्त 1940 की घोषणा कहा जाता है। इसके अनुसार सरकार ने भारत में उत्तरदायी शासन स्थापित करने का वचन दिया। कांग्रेस को सरकार द्वारा की गई घोषणा से घोर निराशा हुई। क्योंकि विश्व युद्ध के कारण महात्मा गांधी सरकार के लिए कोई संकट उत्पन्न नहीं करना चाहते थे।

3. क्रिप्स मिशन की असफलता :→ ब्रिटिश सरकार ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारतीयों से सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से क्रिप्स मिशन की नियुक्ति की। यह मिशन 23 मार्च 1942 ई० को भारत पहुँचा। उसके द्वारा भारतीयों को दी जाने वाली रियासतें एक ढकोसला मात्र से अधिक और कुछ न थी। उसके झूठे आश्वासन भारतीयों दलों को प्रभावित नहीं कर सकें।

4. गाँधी जी के दृष्टिकोण में परिवर्तन :- क्रिप्स मिशन की असफलता के कारण महात्मा गाँधी जी अंग्रेजों से बहुत निराश हुए। अतः कांग्रेस कार्यकारिणी ने 14 जुलाई, 1942 ई० को वर्धा में भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित किया। इस संबंध में कोई आंदोलन शुरू करने से पहले यह अंतिम प्रयास के रूप में वाइसराय लॉर्ड लिनलिथगो को भारतीयों के विचारों से अवगत करवाना चाहते थे। इस संबंध में उन्होंने मीरा बहन एक उच्च कांग्रेस अफसर को भेजी थी।

II. हरियाणा में आंदोलन की प्रगति →

अगस्त 1942 ई० को बंबई में हुए कांग्रेस के अधिवेशन में वर्धा अधिवेशन में पारित किए गए भारत छोड़ो प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गई। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए गाँधी जी के नेतृत्व में एक अहिंसक आंदोलन आरंभ करने का निर्णय लिया गया। महात्मा गाँधी ने कांग्रेस के प्रतिनिधियों को

संबोधित करते हुए कहा, "मैं आपको एक छोटा-सा मंत्र दे रहा हूँ, आप इसे अपने दिलों में संजो कर रख लें। और हर एक साँस में इसका आप जाप करें, यह मंत्र यह है करो या मरो, हम या तो भारत को स्वतंत्र कराएँगे या इस प्रयास में मारे जाएँगे"।

क्योंकि ब्रिटिश सरकार विश्व युद्ध के दौरान किसी आंदोलन को सहन करने के लिए तैयार न थी। अतः उसने इस आंदोलन को आरंभ में ही कुचलने का निर्णय किया। अतः उसने 9 अगस्त की प्रातः को महात्मा गाँधी तथा अन्य कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। इनमें अनेक हरियाणा के कांग्रेसी नेता थे जो बंबई अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए गए थे इसके अतिरिक्त सरकार ने कांग्रेस को गैर कानूनी दल घोषित कर दिया।

कांग्रेस के नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार बंगल में आग की तरह फैला। हरियाणा में भी भारत के अन्य भागों की तरह अपने प्रिय नेताओं की रिहाई के लिए रोहतक में की गई।

III आंदोलन की विफलता के कारण :→

ई० का भारत छोड़ो आंदोलन एक 1942 महान् आंदोलन था। हरियाणा में यह आंदोलन अनेक कारणों के चलते विफल रहा। इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।

1. ब्रिटिश सरकार ने आंदोलन के आरंभ होने से पहले ही महात्मा गाँधी तथा अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया था।
2. सरकार ने इस आंदोलन के दौरान दमन के लिए बहुत कठोर कदम उठाए। अत: लोग आतंकित हो गए।
3. इस आंदोलन को चलाने के लिए लोगों के पास कोई निश्चित योजना तथा कार्यक्रम नहीं था।
4. उस समय हरियाणा में यूनियनिस्ट पार्टी की सरकार थी। यह पार्टी भारत छोड़ो आंदोलन के विरुद्ध थी।
5. हरियाणा में कांग्रेस पार्टी गाँव के लोगों का समर्थन प्राप्त करने में विफल रही।
6. हरियाणा के अनेक लोग हिंसा के विरुद्ध थे।

IV भारत छोड़ो आंदोलन का महत्व

भारत छोड़ो आंदोलन यद्यपि भारत को तत्काल स्वतंत्रता दिलवाने में विफल रहा परंतु इसने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला कर रख दिया था। इस आंदोलन के दौरान हरियाणा के 5000 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया। हरियाणा के लोगों ने अंग्रेजों के अत्याचारों का बड़ी वीरतापूर्वक सामना किया।

डॉ० बी० पी० सिंह के अनुसार, "भारत छोड़ो आंदोलन ने अंग्रेजों के लिए भारत छोड़ना अनिवार्य एवं तीव्र कर दिया।"

प्रश्न→ 1830 से 1947 तक देशी राज्यों ने प्रजातंत्र को रोकने के कारणों का वर्णन कीजिए?

उत्तर→ भूमिका :→ अंग्रेजों ने भारत पर ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के पश्चात् देशी रियासतों पर अपनी सर्वोच्चता को स्थापित किया। देशी रियासतों के शासकों को अंग्रेजी शासन की सर्वोच्चता को स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ा इसके बदले उन्हें अंग्रेजी सरकार ने आंतरिक एवं बाहरी खतरों के समय सहायता देने का वचन किया इस सुरक्षा के चलते अब देशी शासक विलासप्रिय जीवन व्यतीत करने लगे। वे मनमाने ढंग से शासन करने लगे। उनका शासन प्रतिक्रियावादी था। उन्होंने अपनी प्रजा पर बहुत जुल्म करने आरंभ कर दिए। प्रजा से अनेक प्रकार के गैर-कानूनी कर जबरन वसूल किए। जाने लगे हरियाणा में भी भारत के अन्य रियासतों की तरह लोहारू, पटौदी आदि आदोलन चले। इस आंदोलन के चलते अंततः इन रियासतों के शासकों

को अपनी प्रजा की मांगों को मानने के लिए बाध्य होना पड़ा।

लोहारू :→ लोहारू एक छोटी-सी रियासत थी यह राजस्थान के बीकानेर एवं जयपुर राज्यों की सीमा पर तथा वर्तमान हरियाणा के पश्चिमी छोर पर स्थित थी। लोहारू पर अलवर के राजा बख्तावर सिंह का अधिकार था। उसने 1803 ई० में इस क्षेत्र को अपने वकील मुहम्मद वख्श को उसकी बहुमूल्य सेवाओं को देखते हुए इनाम स्वरूप दे दिया था। 1805 ई० में मुहम्मद बख्श ने भरतपुर के राजा के विरुद्ध अंग्रेजों की सहायता की थी। अतः अंग्रेजों ने प्रसन्न होकर मुहम्मद बख्श को इस रियासत का नवाब स्वीकार कर लिया। इस प्रकार मुहम्मद बख्श लोहारू रियासत का प्रथम नवाब बना। उसने 1806 से 1827 ई० तक शासन किया। इस रियासत के अधिकांश लोग लुहार का कार्य करते थे तथा वे जयपुर राज्य के सिक्के बनाते थे अतः इस रियासत का नाम लोहारू पड़ा।

2. **पटौदी** :→ पटौदी गुड़गाँव से 26 Km दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। पटौदी रियासत का प्रथम नवाब फैज तलब खाँ था। उसने 1806 से 1829 ई० तक शासन किया था। अंग्रेजों ने उसे यह रियासत उसे द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के समय अंग्रेजो की बहुमूल्य सहायता के परिणाम स्वरूप दी थी। इस रियासत का कुल जनसंख्या 21,520 थी। 1917 ई० में मुहम्मद इफ्तिखार अली खाँ पटौदी का नया नवाब बना। वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर के क्रिकेट के प्रसिद्ध खिलाड़ी थे। वह 1936 ई० में भारतीय क्रिकेट टीम के कैप्टन बने थे इस कारण उन्होंने अपना समस्त ध्यान क्रिकेट की ओर दिया। ऐसी स्थिति में रियासत का शासन चलाने का उत्तरदायित्व दीवान खान बहादुर शेख आलम खाँ को सौंपा गया। उस समय प्रशासन में बहुत भ्रष्टाचार फैला हुआ था।

3. **दुजाना** :→ दुजाना रोहतक से झज्जर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। इस नगर की स्थापना 15वीं शताब्दी में बाबा दुर्जन शाह ने की थी। दुजाना का रियासत के रूप में उदय 1805 ई० में हुआ था उस समय लॉर्ड लेक ने मराठों के विरुद्ध अब्दुस समद खाँ द्वारा अंग्रेजों को दिए गए प्रशंसनीय योगदान के कारण उसे दुजाना रियासत इनाम के तौर पर दी थी इस प्रकार अब्दुल समद खाँ दुजाना रियासत का प्रथम नवाब बना। उसने 1825 ई० तक शासन किया था। दुजाना काफी छोटी रियासत थी। इसका कुल क्षेत्रफल 259 वर्ग Km था तथा 1892 ई० में इसकी कुल जनसंख्या 23,416 थी। 1925 में मुहम्मद इफ्तदार अली खाँ इस रियासत का 7वाँ नवाब बना था वह बहुत विलास-प्रिय शासक था। उसके शासनकाल में भ्रष्टाचार बहुत फैला हुआ था उसने जनता पर अनेक प्रकार के अनुचित कर लगाए हुए थे।

4. पटियाला :→ आधुनिक महेन्द्रगढ़ जिले का नारनौल क्षेत्र पटियाला रियासत के अंतर्गत था पटियाला की रियासत पंजाब की सबसे बड़ी रियासत थी। इसका कुल क्षेत्रफल 5,932 वर्गमील था इसकी कुल जनसंख्या 15 लाख थी यहाँ महाराजा भूपिंदर सिंह ने 1900 ई० से 1938 ई० तक तथा महाराजा यादविंदर सिंह ने 1938 से 1948 ई० तक शासन किया इन दोनों शासकों ने तेजा की भलाई की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। रियासत की अधिकांश जनसंख्या कृषि क्षेत्र में कार्यरत थी। इसके बावजूद राज्य की ओर से कृषि के विकास के लिए कोई कदम नहीं उठाया गया था। किसानों को किसी भी प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त नहीं थी। सिंचाई का विकास न के बराबर था। इसी ओर किसानों से बहुत अधिक एवं जबरन भू-राजस्व वसूल किया जाता था। 1907-08 ई० के पश्चात् किसी प्रकार की नई

सड़कों का निर्माण किया गया था।

5. जींद :→ जींद हरियाणा की महत्वपूर्ण रियासतों में से एक थी। इस रियासत की स्थापना 1763 ई० में गजपत सिंह ने की थी 1774 ई० में मुगल बादशाह शाह आलम ने उसे 'राजा' के खिताब से सम्मानित किया था। उसके वंश के शासकों ने 1948 ई० तक जींद पर शासन किया था 1887 ई० में रणवीर सिंह जींद रियासत का नया शासक बना। उसने 1948 ई० तक शासन किया था। उसके शासन काल में भी अन्य रियासतों की तरह भ्रष्टाचार का बोलबाला था लोगों पर अनेक प्रकार के अनुचित कर लगाए गए थे। किसानों की दशा बहुत दयनीय थी। उसका प्रधानमंत्री गंगाराम क्रूर प्रजा पर अमानवीय जुल्मों के कारण बहुत बदनाम थी। इन कारणों से जींद की प्रजा में महाराजा एवं उसके प्रधानमंत्री के विरुद्ध बहुत रोष था अतः 1931 ई० में जींद की राजधानी संगरूर में प्रजामंडल की स्थापना

की गई।

6 नाभा :→ नाभा रियासत की स्थापना 1729 ई० में गुरादित्य सिंह ने की थी। 1857 ई० के विद्रोह के समय नाभा रियासत के शासक भरपूर सिंह ने अंग्रेजों की बहुमूल्य सेवा की थी। इस वफादारी के लिए अंग्रेजों ने उसे हरियाणा के बावल, कनीना एवं अटेली नायक क्षेत्र इनाम के तौर पर दिए थे। महाराजा प्रताप सिंह 1923 ई० में नाभा रियासत का नया शासक बना था। उसने 1948 ई० तक शासन किया, उसके शासनकाल में नाभा में भ्रष्टाचार ने विकराल रूप धारण किया था प्रजा पर भारी कर लगाए गए थे। किंतु शीघ्र ही जब स्थिति महाराजा के नियंत्रण में न हुई तो उसने प्रजा की सभी मांगों को स्वीकार कर लिया।

प्रश्न → आर्य समाज पर संक्षिप्त नोट लिखिए?

उत्तर → भूमिका :→ 19 वीं शताब्दी में भारत में चलने वाले सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलनों में आर्य समाज को सबसे गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। इस आंदोलन के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती जी थे। उनका जन्म 1824 ई० में काठियावाड के टंकारा गाँव में एक संपन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था उनके बचपन का नाम मूल शंकर था स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने लोगों के अंध - विश्वासों को दूर करने तथा उन्हें ज्ञान का एक नया मार्ग दिखाने के उद्देश्य से 10 अप्रैल, 1875 ई० को बंबई में आर्य समाज की स्थापना की।

आर्य समाज का हरियाणा में प्रसार

स्वामी दयानंद सरस्वती जी का हरियाणा में प्रथम कदम 17 जुलाई 1878 ई० को अंबाला में पड़ा। उस समय वे पंजाब से रुड़की की ओर प्रचार के सिलसिले में

जा रहे थे। उस समय स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने हिंदू समाज में प्रचलित सामाजिक एवं धार्मिक अंधविश्वासों की कटु आलोचना की। वे हरियाणा में आर्य समाज का प्रचार करने के उद्देश्य से 1880 ई० में रेवाड़ी में पधारे। यहाँ स्वामी जी का महीर नेता राव युधिष्ठिर ने गर्मजोशी से स्वागत किया। राव युधिष्ठिर स्वामी जी के विचारों से इतना प्रभावित हुआ कि उनका शिष्य बन गया। यहाँ स्वामी जी ने समाज में फैली अज्ञानता एवं रूढ़िवाद का कट्टर शब्दों में खंडन किया। उन्होंने यहाँ ग्यारह व्याख्यान दिए। स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने राव युधिष्ठिर को प्रेरणा देकर एक गौशाला की स्थापना करवाई। यहाँ उत्तरी भारत में स्थापित की जाने वाली प्रथम गौशाला थी।

हरियाणा में आर्य समाज की लोकप्रियता :→ हरियाणा में आर्य समाज की लोकप्रियता के लिए अनेक

कारण उत्तरदायी थे। इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।

① आर्य समाज ने हरियाणा की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन लाने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

② हरियाणा के अधिकांश लोग ग्रामीण थे। वे सीधे-सादे स्वभाव के थे।

③ हरियाणा की कृषक जातियों में जाटों का प्रमुख स्थान है।

④ हरियाणा के ब्राह्मण भारत के अन्य भागों की तरह अधिक रूढ़िवादी नहीं थे अतः वह स्वामी दयानंद जी के शिक्षाओं से बहुत अधिक प्रभावित हुआ।

⑤ हरियाणा के अधिकांश लोग शाकाहारी थे। वे गौमाता का बहुत सम्मान करते थे।

⑥ हरियाणा के लोगों का वेदों में अटूट विश्वास था। वे स्वामी दयानंद जी के नारे पुनः वेदों की ओर से बहुत प्रभावित हुए थे।

⑦ हरियाणा में आर्य समाज को लोकप्रिय बनाने में लाला लाजपत राय, पंडित बंसती राम, लाला चूड़ामणि,

पंडित लेखपत राय आदि का विशेष योगदान दिया।

आर्य समाज की सफलताएँ →

19वीं शताब्दी में चले आर्य समाज आंदोलन ने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलताएँ प्राप्त की। इन सफलताओं के सही आंकलन के लिए हमें उस समय के हिंदू समाज की सामाजिक एवं धार्मिक दशा की जानकारी प्राप्त करना है।

(क) सामाजिक दशा :→

19 शताब्दी के हरियाणा समाज में भारत के अन्य भागों की तरह अनेक कुरीतियाँ प्रचलित थी। इस काल में जाति प्रथा तथा छुआछूत की भावना बहुत जटिल हो चुकी थी। उस समाज ने केवल चार मुख्य जातियों, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र, अपितु कई अन्य जातियों तथा उप-जातियों में विभाजित था। ये जातियाँ तथा उप-जातियाँ एक दूसरे से घृणा करती थी। समाज को निम्न जातियों पर कई प्रकार के अत्याचार किए जाते थे।

(ख) धार्मिक दशा :→

19वीं शताब्दी में हिंदू समाज के चारों ओर एक गहरा अंधकार छाया हुआ था। लोग वेदों में बताए गए सत्य को भूल चुके थे। वे एक ईश्वर के स्थान पर अनेक देवी-देवताओं की उपासना करने लग पड़े थे। एक देवता की उपासना करने वाले लोग दूसरे देवता की उपासना करने वाले लोगों से घृणा करने लगे थे। इस कारण समाज में परस्पर तनाव बहुत बढ़ गया था। इसके अतिरिक्त लोग कई प्रकार के अंध-विश्वासों में व्यक्त रहते थे।

(ग) आर्य समाज के दस नियम

स्वामी दयानंद जी ने निम्नलिखित दस नियमों को प्रभावित किया।

1. सच्चा ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है तथा ईश्वर ही ज्ञान का स्त्रोत है।
2. ईश्वर, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वव्यापक, दयावान तथा अमर है वह ही सृष्टि का रचयिता है।
3. वेदों में सच्चा ज्ञान दिया गया है इसलिए वेदों को पढ़ना तथा दूसरों को सुनना सभी आर्यों का धर्म है।

4. प्रत्येक आर्य को सत्य ग्रहण करने के लिए तथा झूठ का त्याग करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।
5. सभी कार्य सोच-समझ कर करने चाहिए। अनुचित कार्यों से दूर रहना चाहिए।
6. समस्त विश्व का कल्याण करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है इसलिए लोगों को शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए।
7. सभी से स्नेह तथा सहानुभूति से व्यवहार रहना चाहिए।
8. प्रत्येक को अपनी ही प्रगति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए। अपितु दूसरों की प्रगति में ही अपनी प्रगति समझनी चाहिए।
9. अज्ञानता का नाश तथा ज्ञान में वृद्धि करनी चाहिए।
10. प्रत्येक व्यक्ति को अपने से संबंधित मामलों में निजी स्वतंत्रता होनी चाहिए, किंतु उसे सार्वजनिक हितों को सर्वोच्च महत्व देना चाहिए।

आर्य समाज की सफलताएँ

आर्य समाज ने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सफलताएँ प्राप्त की। इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार हैं।

1. धार्मिक क्षेत्र में सफलताएँ :→ आर्य-आर्य समाज का धार्मिक क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान था। स्वामी दयानंद जी ने सर्वप्रथम ईश्वर की एकता पर बल दिया। उनके विचारानुसार ईश्वर ही सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापक हैं। उन्होंने मूर्ति पूजा का जोरदार शब्दों में खंडन किया। वे धर्म के झूठे आडंबरों को बुरा मानते थे। उन्होंने लोगों को झूठी परंपराओं से दूर रहने को कहा। उन्होंने समाज में बढ़ते हुए ब्राह्मणों के प्रभाव का विरोध किया उन्होंने लोगों से सदा एवं पवित्र जीवन व्यतीत करने का संदेश दिया।

2. सामाजिक क्षेत्र में सफलताएँ :→ आर्य समाज ने सामाजिक क्षेत्र में अति महत्वपूर्ण सफलताएँ प्राप्त की। स्वामी दयानंद जी ने इस बात पर बल दिया कि समाज में स्त्रियों का सम्मान किया। जाना चाहिए। उन्हें पुरुषों के बराबर अधिकार दिए जाने चाहिए।

आप ने बाल विवाह का विरोध किया। आप विधवा विवाह के पक्ष में थे। उन्होंने विधवा स्त्रियों के लिए विधवा आश्रम स्थापित किए। आर्य समाज ने सती प्रथा एवं दहेज प्रथा के अंत पर बल दिया। स्वामी दयानंद जी ने स्त्रियों में जागृति लाने के उद्देश्य से उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

3. शिक्षा के क्षेत्र में सफलताएँ :→ आर्य समाज ने भारत के अन्य भागों की तरह हरियाणा के समाज में भी फैली अज्ञानता को दूर करने तथा लोगों में नई जागृति लाने के उद्देश्य से शिक्षा के प्रसार पर बल दिया। 1891 की जनसंख्या रिपोर्ट के अनुसार उस समय पंजाब में की जनसंख्या के पीछे 74 पुरुष एवं केवल 1 स्त्री ही पढ़ी लिखी थी। अतः स्वामी दयानंद जी ने समाज को एक नई दिशा देने के उद्देश्य से शिक्षा के विकास पर बल दिया। निःसंदेह आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

4. राजनीतिक क्षेत्र में सफलताएँ :→ यद्यपि आर्य समाज कोई राजनीतिक संस्था नहीं थी तथापि स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने राजनीतिक क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। स्वामी दयानंद जी ने भारतवासियों में राष्ट्रीय स्वाभिमान उत्पन्न करने के प्रयास किए। इस संबंध में उन्होंने शिक्षा के प्रसार पर बल दिया। उन्होंने ही सर्वप्रथम 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग किया।